Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ISSN 2454-3705

श्रुतसागर | શ્રુતસાગર

SHRUTSAGAR (MONTHLY)

April-2022, Volume : 08, Issue : 11, Annual Subscription Rs. 150/- Price per copy Rs. 15/-

Editor : GAJENDRA RAGHUNATHJI SHAH

BOOK-POST / PRINTED MATTER

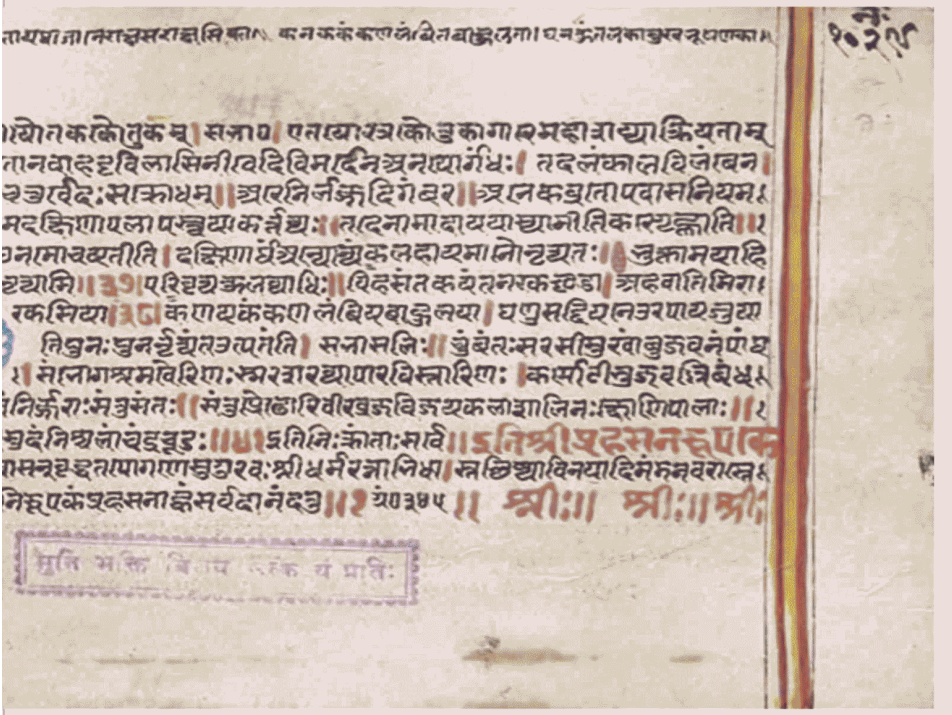

जयवंतसूरि नामोल्लिखित प्रशस्तिपाठयुक्त
काव्यसाहित्य की प्रत का पत्र.
(जयवंतसूरि परिचय हेतु देखें पृ. १०)

For Private and Personal Use Only

लेखन सामग्री श्रेणी-५

प्रकार - वर्तुल बनाने हेतु उपयोगी साधन.

काष्ट चिमटा - बांस से बना यह चिमटा ग्रंथ के जीर्ण या भीगी स्याही वाले पत्रों को पकडने के काम आता है.

चिमटा - धातु निर्मित यह चिमटा ग्रंथ के जीर्ण या भीगी स्याही वाले पत्रों को पकडने के काम आता है.

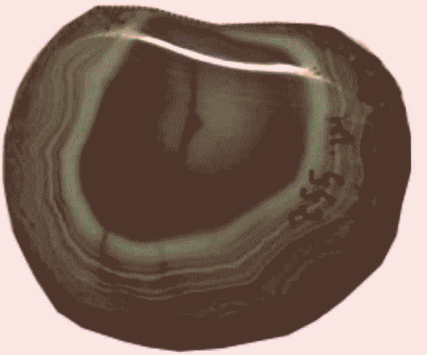

अकीक पत्थर - ताडपत्रों के उपर घिसकर उनकी नसों को सपाट करने के लिये काम आता है. एवं हस्तलिखित प्रतों के पन्नों पर घिसकर उन्हें चमकदार बनानें के काम आता है.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

RNI : GUJMUL/2014/66126 ISSN 2454-3705

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर का मुखपत्र

श्रुतसागर શ્રુતસાગર

SHRUTSAGAR (Monthly)

वर्ष-८, अंक-११, कुल अंक-९५, अप्रैल-२०२२

Year-8, Issue-11, Total Issue-95, April-2022

वार्षिक सदस्यता शुल्क - रु. १५०/- ❖ Yearly Subscription - Rs.150/-

अंक शुल्क - रु. १५/- ❖ Price per copy Rs. 15/-

आशीर्वाद

राष्ट्रसंत प. पू. आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

❖ संपादक ❖ **❖ सह संपादक ❖**

गजेन्द्र रघुनाथजी शाह राहुल आर. त्रिवेदी

एवं

ज्ञानमंदिर परिवार

१५ अप्रैल, २०२२, वि. सं. २०७८, चैत्र शुक्ल चतुर्दशी

प्रकाशक

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

(जैन व प्राच्यविद्या शोध-संस्थान एवं ग्रन्थालय)

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा, गांधीनगर-३८२४२६

फोन नं. ७५७५००१०८१, ७५७५००१०८२, ७५७५००१०८४,

७५७५००१०८५, वॉट्स-एप ७५७५००१०८१

Website : www.kobatirth.org **Email :** gyanmandir@kobatirth.org

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुक्रम

१.	संपादकीय	श्री गजेन्द्र शाह	५
२.	श्रुतप्रेमी दाताओं की सूची	-	७
३.	गुरुवाणी	आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरिजी	८
४.	Awakening	AcharyaPadmasagarsuri	९
५.	३ श्रेष्ठ कविओनी लघुकृतिओ	गणि सुयशचंद्र-सुजसचंद्रविजयजी	१०
६.	आगम प्रभाकर मुनिराज श्री पुण्यविजयजी महाराज - उत्कट ज्ञानसाधना अने सौम्य सत्यसाधना	डॉ. कुमारपाळ देसाई	२०
७.	लखनौ म्युझीयमनी जैन मूर्तिओ	मुनिराज श्री न्यायविजयजी	२७
८.	पुस्तक समीक्षा	डॉ. हेमन्त कुमार	३०
९.	समाचार सार		३२

भाग्यां मन भगती किसी, त्रुटो गुण म सांधि ।
सरोवर फाटोने नीर गयो, गहेली पाल म बांधी ।।

प्रत क्र - १५००७२

भावार्थ- मन भग्न होने पर भक्ति कैसी, जो टूट गया है उसे सांधने से क्या फायदा । सरोवर टूटा और पानी बह गया, हे मुग्धे ! फिर पाल बांधने से क्या फायदा ।

❖ प्राप्तिस्थान ❖

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
तीन बंगला, टोलकनगर, होटल हेरीटेज़ की गली में
डॉ. प्रणव नाणावटी क्लीनिक के पास, पालडी
अहमदाबाद - ३८०००७, फोन नं. (०७९) २६५८२३५५

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संपादकीय

गजेन्द्र शाह

सभी वाचकों एवं शुभचिंतकों को भगवान महावीर जन्मकल्याणक के पावन अवसर पर हार्दिक शुभकामना। प्रस्तुत अंक में ७ अप्रगट कृतियों के साथ कुल ७ लेख प्रकाशित किए गए हैं। यथा- १. गुरुवाणी, २. Awakening, ३. ३ श्रेष्ठ कविओनी लघुकृतिओ (५ अप्रगट कृतियाँ), ४. आगम प्रभाकर मुनिराज श्री पुण्यविजयजी महाराज - उत्कट ज्ञानसाधना अने सौम्य सत्यसाधना, ५. लखनौ म्युझीयमनी जैन मूर्तिओ, ६. जैन ज्ञानभंडारोनो इतिहास (पुस्तक समीक्षा)।

१. गुरुवाणी- जिनशासनसाम्राज्य के स्वामी, सेवक, सैनिक, संरक्षक, सेनापति, प्रचारक, प्रसारक, न्यायाधीश आदि किसे कहते हैं, उसका सुव्यवस्थित व्यवस्थातंत्र दर्शाने वाला पत्र योगनिष्ठ प. पू. आ. श्री बुद्धिसागरसूरीश्वरजी म. सा. की पुस्तक "धार्मिक गद्य संग्रह भा.१" में से यहाँ प्रकाशित किया गया है। (लेख शीर्षक संपादक प्रदत्त है)

२. Awakening- अशुद्ध व बिनापरिश्रम का भोजन किस प्रकार हमारे शरीर को अस्वस्थ करता है और शरीर की अस्वस्थता किस प्रकार मानसिक बीमारी तक पहुंचती है, उसका संकेत व संदेश देने वाला प्रवचनांश राष्ट्रसंत प. पू. आ. श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म.सा. के पावन प्रवचन की पुस्तक **Awakening** से क्रमशः प्रकाशित किया गया है। पूज्यश्री ने उदाहरण के साथ प्रस्तुत कर वाचकों के लिए विषय को आसान बना दिया है।

३. ३ श्रेष्ठ कविओनी लघुकृतिओ- इस लेख में ५ अप्रगट कृतियों को प्रकाशित किया गया है। इसका संपादन पू. गणिवर्य श्री सुयश-सुजशचंद्रविजयजी म.सा. द्वारा किया गया है। इनमें प्रथम ३ कृतियाँ कवि लावण्यसमय की दी गई हैं, उनमें से प्रथम कृति में कवि द्वारा प्रभु के प्रति विश्व में रहे विविध धर्मों आदि से संबंधित प्रश्न प्रस्तुत किये गये हैं और दूसरी में प्रभु द्वारा प्रदत्त उनके उत्तर स्वरूप कृति प्रस्तुत की गई है। तीसरी कृति में श्रीसिद्धाचलतीर्थ महिमा का स्तवन दिया गया है। उसके बाद जयवंतसूरिजी रचित चौथी कृति में श्री पार्श्वनाथ भगवान का प्रभाव व चरित्र का वर्णन किया है। कवि सकलचंदजी कृत पांचवीं कृति में चंद्राउला संज्ञक नेमिनाथ भगवान से संबंधित रचना प्रस्तुत की है, जिसमें राजिमती की गहन विरह वेदना का कवि ने रोचक वर्णन किया है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

४. आगम प्रभाकर मुनिराज श्री पुण्यविजयजी महाराज- उत्कट ज्ञानसाधना अने सौम्य सत्यसाधना- आगमप्रभाकर पू. मुनि श्री पुण्यविजयजी म. की संपादन साधना, विविध ज्ञानभंडारों का व्यवस्थापन आदि की विस्तृत एवं हृदयस्पर्शी बातों का डॉ. कुमारपाळ देसाई द्वारा लिखित लेख क्रमशः प्रकाशित किया गया है और इस अंक में इसे संपूर्ण किया है।

५. लखनौ म्युझीयमनी जैन मूर्तिओ- "जैन सत्य प्रकाश" मैगजीन में से मुनिराज श्री न्यायविजयजी लिखित लेख क्रमशः साभार प्रकाशित किया गया है। इसमें म्यु. के विविध खंडों का व्यवस्थापन, किस खंड में कैसी जिनप्रतिमाएँ आदि है तथा उनमें से किस पर कैसे शिलालेख है आदि ऐतिहासिक ध्यानाकर्षक बातें दी गई हैं।

६. जैन ज्ञानभंडारोनो इतिहास- मुनि हितार्थरत्नविजयजी के द्वारा संपादित इस पुस्तक में आधुनिक, अर्वाचीन, प्राचीन ज्ञानभंडारों के बारे में किस प्रकार विवरण प्रकाशित किया गया है तथा यह पुस्तक ज्ञानपिपाशु, विद्वानों तथा ज्ञानभंडारों आदि हेतु कितना उपयोगी है उसकी महत्ता का वर्णन कोबा ज्ञानमंदिर के ग्रंथपाल डॉ. हेमन्त कुमारजी द्वारा किया गया है।

प्रस्तुत अंक में दी गई सामग्री से वाचक लाभान्वित बने तथा अपने महत्वपूर्ण सुझावों से हमें अवगत करावें यही शुभाभिलाषा...

❋ ♦ ❋

क्या आप अपने ज्ञानभंडार को समृद्ध करना चाहते हैं ?

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा में आगम, प्रकीर्णक, औपदेशिक, आध्यात्मिक, प्रवचन, कथा, स्तवन-स्तुति संग्रह आदि विविध प्रकार के साहित्य प्राकृत, संस्कृत, मारुगुर्जर, गुजराती, राजस्थानी, पुरानी हिन्दी, अंग्रेज़ी आदि भाषाओं में लिखित विभिन्न प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित बहुमूल्य पुस्तकों का अतिविशाल संग्रह है, जो हम ज्ञानभंडारों को भेंट में देते हैं। भेंट में देने योग्य पुस्तकों की सूची तैयार है। यदि आप अपने ज्ञानभंडार को समृद्ध करना चाहते हैं, तो यथाशीघ्र संपर्क करें। पहले आने वाले आवेदन को प्राथमिकता दी जाएगी।

ग्रंथपाल

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रुतप्रेमी दाताओं की अनुमोदना

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा

सकल जैनसंघ का गौरवस्थान

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

सदुपदेशक : प्राचीन श्रुत-तीर्थोद्धारक, राष्ट्रसंत

पूज्य आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा

श्रुतप्रेमी दाताओं की नामावली

- मृदुलाबेन अश्विनभाई शाह, सुरत.
- शाह जीतेन्द्रभाई अंबालाल अेच.यु.एफ, अमदावाद.
- पंकजकुमार कान्तिलाल शाह, यु.अेस.ए.
- श्री कल्पेशभाई डी.भंडारी, भायंदर वेस्ट, मुंबई.
- श्रीमती विमलाबेन धनराज भंडारी, भायंदर वेस्ट, मुंबई.
- श्रीमती दिपा कल्पेशभाई भंडारी, भायंदर वेस्ट, मुंबई.
- श्री रश्मिकांत ए.शाह, नारणपुरा, अमदावाद.
- श्री अर्पिश रश्मिकांत शाह, नारणपुरा, अमदावाद.
- श्रीमती विश्रुती विशालकुमार शाह, नारणपुरा, अमदावाद.
- श्रीमती हंसाबेन नरेशभाई शाह, नारणपुरा, अमदावाद.

धन्यवाद... अनुमोदना... अभिनंदन...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुरुवाणी

जैनधर्मरूप राज्यनुं व्यवस्थातंत्र

योगनिष्ठ आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरि म.सा.

संवत् १९६८ ना पोष वदि १० रविवार ता. १४-१-१२ वलसाड.

जैनधर्मरूप राज्यना राजा श्रीमहावीरप्रभु छे। सांप्रत सर्वे जैनो श्रीमहावीरप्रभुना राज्यमां गणी शकाय। हाल तेना प्रवर्तक आचार्यो उपाध्यायो वगेरे संघ गणी शकाय छे। व्याकरण न्याय आदि भणीने जे साधुओ वादसंपन्न थया छे ते तो जैनधर्म राज्यना सेनापतिनी उपमाने धारण करे छे। जैनधर्म राज्यना रक्षण माटे जेओ तन मनथी प्रयत्न करे छे, तेओ योद्धाओनी पदवीने धारण करे छे। जैनधर्मनो फेलावो करवाने माटे जेओ अनेक प्रकारना उपायोने जाणे छे अने अन्य धर्मनां शास्त्रोने जाणे छे। तेमज अन्य धर्माचार्योनी हीलचालने जाणीने तेओनी देखरेख राखी जैनधर्म राज्यने टकाववा सदाकाल प्रयत्न करे छे तेओ रेसीडेन्ट समान जाणवा। जैनधर्म राज्य प्रवर्तावनो मुख्य कारोबार करीने सर्व उपर देखरेख राखनाराओ आचार्यो वॉइसरायना ठेकाणे जाणवा। चतुर्विध संघनी सभा ते पार्लामेंटने ठेकाणे जाणवी। जैनधर्मना सिद्धांतो जाणीने मध्यस्थदृष्टिथी जैनधर्म पाळनाराओने उपदेश आपे छे। अने तेओना प्रश्नोना उत्तरो आपे छे तथा जैन धर्ममां परस्पर थती चर्चाओनुं जे समाधान करे छे तेओ जजना ठेकाणे जाणवा अर्थात् तेओ जैन धर्म राज्यना जडजो अवबोधवा। सात नयनो किल्लो समजवो। सात नय भंगी रूप व्यूह रचना समजवी। सत्यनी मोटी तोपो समजवी। चमत्कार रूप हवाइ विमानो समजवां जैन धर्म राज्यना आठ प्रभावको छे। जैन गुरूकुलो वगेरे जैनधर्मराज्य वधारवानी उत्तम संस्थाओ छे। सुसाधुओनुं लश्कर ज्यां त्यां फरतुं जाणवुं। आगमोने नौकाओना ठेकाणे जाणवा। जैनधर्मराज्यना बंधारणथी जैन राज्यनी वृद्धि थाय छे। देशकालने अनुसरीने जैनधर्म राज्यनां बंधारणोने सुधारवां जोइए। जैनधर्मराज्यनुं रक्षण तथा तेनो फेलावो करवाने जैनोए कुसंप क्लेश वगेरेने देशवटो आपीने एक चित्तथी कार्य करवां जोइए। बाह्य राज्यनां जेटलां खातां छे अने जेवी उत्तम व्यवस्था करवी पडे छे। तेवी रीते जैनधर्मराज्यनां खातां होय छे। अने तेनी उत्तम व्यवस्था करवी जोइए। जैनधर्मनी धार्मिक क्रियाओना योगीओ जैनोदयमां प्रवृत्ति करे छे अने आध्यात्मिक फीलोसोफरो जैनधर्मराज्यनां सूक्ष्मतत्त्वोनुं रक्षण करे छे। अनेकान्तदृष्टिथी जैनधर्म राज्यने देखी शकाय छे।

धार्मिक गद्य संग्रह भाग – १, पृष्ठ –१८७-१८८

❋ ♦ ❋

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Awakening

Acharya Padmasagarsuri

(from past issue...)

After eating food, an ascetic fell asleep and on seeing this, his mentor got a doubt. When an enquiry was made from which sait's house, the food had been brought, he found out that it was stale food. The sait had given away to the ascetic the food that he had brought from the temple. If we eat stale and low food the mind also grows dull and low. The dog wags its tail when it eats pieces of bread; an elephant eats food to its satisfaction, with dignity. Society will not acquire spiritual elevation by giving away food that has been obtained from temples. Society can attain spiritual elevation only by giving away food that has been earned by hard work.

Unhappy conditions prevail in families on account of the absence of effort, hard work and high objectives. Formerly, the housewife used to prepare food and serve it to her husband with affection but today the cook prepares food and mechanically tosses it into plates. The cook has no affection for his master. His mind always thinks of his wages. He does not give as much attention to the food he prepares as the housewife would give it. On account of unclean food our health also is affected.

If there is a hair in the food it affects our voice and if there is an ant in the food it ruins our intelligence. If there is a housefly in the food we feel sick of the food. If there is a spider in the food, we get leprosy. The presence of various insects can cause various diseases. Physical diseases affect mental health. Thus unclean food affects both physical health and mental health.

(continue)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३ श्रेष्ठ कविओनी लघुकृतिओ

गणि सुयशचंद्र-सुजसचंद्रविजयजी

आगळनी कृतिमां आपणे १५मी शताब्दीना श्रेष्ठ कवि लावण्यसमयनी रचना विशे विचार्युं हतुं। आजे फरी आपणे तेमनी साथे, ते ज श्रेणीना अन्य पण २ कविओनी अप्रगट रचनाओ तथा तेनो परिचय मेळवीशुं। ते जोता पूर्वे सौ प्रथम कवि परिचय जोईए।

कवि परिचय

१) कवि लावण्यसमयजी- तेओनुं गृहस्थ अवस्थानुं नाम हतुं लघुराज। माता-झमकल, पिता-श्रीधरना पुत्र तेओनो जन्म अमदावादमां थयो हतो। नानी वयमां तपागच्छाधिपति पू. लक्ष्मीसागरसूरि पासे दीक्षा स्वीकारीने तेमणे पोताना गुरु पू. समयरत्नसूरि पासे विद्याध्ययन कर्युं। तेमां'य छंद, काव्यादि विषयोमां तेओए निपुणता प्राप्त करी विविध काव्योनी सर्जना करी हती।

धर्म प्रचार-प्रसार हेतुथी रचायेलुं होवा छता तेमना सर्जनमां विचारोनो नवो उन्मेष जोवा मळतो। भावसभर तथा चित्रात्मक शैलीथी पण तेमनां काव्यो वधु चित्ताकर्षक लागतां। विमलप्रबंध, नेमि-रंगरत्नाकरप्रबंध, नेमिनाथ हमची विगेरे काव्यो तेमनी रचनामानां श्रेष्ठ काव्यो कही शकाय।

२) कवि जयवंतसूरिजी- तेओना गृहस्थजीवननी के चारित्रजीवननी कोई घटना प्रायः कोई ठेकाणे जोवा मळती होय तेवुं ध्यानमां नथी। मात्र तेमनी संयमी अवस्थानी एटले के तेमना, तेमना गुरुभगवंतना तथा गच्छना नामनी थोडी विगतो नोंधायेली मळे छे जे नोंध मुजब तेओ वडतपगच्छनी रत्नाकर शाखाना विजयरत्नसूरिजीनी परंपराना उपाध्याय विनयमंडण गणिना शिष्य हता तेमनुं अपर नाम गुणसौभाग्य हतुं।

साधुकवि एवा तेओनी रचना धर्मबोधदायक होवानी साथे साथे विविध रसोना संयोजनवाळी, हृदयंगम निरूपणवाळी तथा अलंकारादिकना वैशिष्ठ्यवाळी छे। वळी तेमां प्रयोजायेल हिंदी, मराठी विगेरे भाषाना प्रयोगो तथा सुभाषितो तेमज कहेवतोनो विनियोग काव्यने वधु रसाळ बनावे छे। तेमां'य तेमणे रचेला शृंगार- मंजरी, ऋषिदत्ता रास, स्थूलिभद्र चंद्रायणि जेवा ग्रंथोमां उपरोक्त विगतो वधु सारी रीते समजी शकाय छे। तेमनो समयकाल १७मी सदी अनुमानित मानी शकाय।

३) कवि सकलचंदजी- तेओ तपागच्छनी परंपराना विजयदानसूरिजीना शिष्य

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विजयहीरसूरिजीना शिष्य हता। जयवंतसूरिजीनी जेम तेमना जीवननी कोई विगतो क्यांय नोंधायेली होवानुं ध्यानमां नथी। मात्र तेमणे काउसग्गध्यान दरम्यान सत्तरभेदी पूजा रची होवा विषेनी एक किंवदंति मळे छे।

प्रायः २५ थी ३० जेटली कृतिओनी रचना करनारा तेओ संस्कृत, प्राकृत भाषाना सारा विद्वान छे। तेमनी रचना मौलिक, तत्त्वसभर तथा भाववाही छे। तेमां'य टूंकी, रसाळ रचनाओ तेमना काव्यनी विशेषता छे। कृतिगत शब्दोनो भंडोळ तथा तेने प्रयोजवानी शैली तेमना सहज कवित्वने दर्शावे छे। कविकृत ऋषभदेव समतासुरलता स्तवन, मृगावती आख्यान, विजयदानसूरि सज्झाय कविनी विशिष्ट रचनाओ छे।

[संपादित कृतिना रचयिता कवि सकलचंदजी कोण छे तेनी स्पष्ट नोंध कृतिमां क्यांय नथी परंतु सकलचंदजी नामना समान नामक मुनिओनी तपास करता अन्य २ कर्ताओ करतां (एक कवि सकलचंदजी। समय- १६मी सदी, जेओ खरतरगच्छनी परंपराना छे। तेमनी रचनामां मात्र १ गहुंली मळे छे। ज्यारे बीजा कवि सकलचंदजी सूरपाल रासना रचयिता। समय-१७मी सदी प्रायः, अज्ञात गुरुना शिष्य छे) अत्रोल्लेखित कर्ता ज प्रस्तुत कृतिना रचयिता होवा जोइए तेवुं विचारीने एमनो ज परिचय अमे अहीं आलेख्यो छे]

कृति परिचय

अहीं संपादित थयेल प्रथम त्रण कृतिओ कवि लावण्यसमयनी लघु रचनाओ छे। कविए अहीं ते कृतिओ द्वारा अनुक्रमे सत्यमार्गनी जिज्ञासा, ते माटेनो प्रभुनो प्रत्युत्तर तथा विमलाचलनी स्तवना आलेखी छे।

जेमां सौ प्रथम सत्यमार्गनी जिज्ञासा विशे कवि प्रभुने कहे छे के हे प्रभु! तमोए आ ते केवी व्यवस्था करी के मुक्तिने माटे तारुं ध्यान धरनारा तने जे जूदा जूदा स्वरूपे भजे? वळी पोताना देवनी कीर्त्ति करता तेओ अन्यनी निंदा करे ते'य केवुं? अरे भोळा भक्तने आम जूदा जूदा मार्ग बताडी, जंजाळमां पाडी, जगतमां भमाडवानुं तारी पासे कोई कारण खरूं? कविए कृतिमां छेल्ले प्रभुने सत्यमार्गने स्वप्नमां के प्रत्यक्ष देखाडवानुं कही काव्यनुं समापन कर्युं छे।

उपरोक्त प्रश्नोनो प्रत्युत्तर प्रभुए जे आप्यो तेनी विगत आलेखता कविए बीजा गीतनी शरूवातमां पोताना ज विभिन्न भेद रूपे ब्रह्मादिक देवोने दर्शावी तेओ सर्वे एक कई रीते छे तेनुं सदृष्टांत निरूपण करतां ईश्वरनी वात आलेखी छे, ज्यारे त्यारपछीना

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पद्योमां सत्यमार्गनी तथा स्वप्नमां प्रभु वडे (कविने) अपाता उपरोक्त जवाबनी वात आलेखी छे।

लावण्यसमयनी हवेनी त्रीजी कृतिमां गिरिराजना महिमानुं वर्णन आलेखता कविए स्वमनोगत गिरिराजना दर्शननी उत्कंठा तेमज प्रभुपूजानी उत्सुकता शरूवातना पद्योमां दर्शावी त्यारपछी प्रभुपूजा फळनुं, रायणवृक्षनुं तथा छरीपालित यात्रानुं वर्णन संक्षेपमां रजू कर्युं छे।

त्यारपछीनी रचना कवि जयवंतसूरिनी चिंतामणि पार्श्वनाथ प्रभुनी स्तवना छे। अहीं कृतिमां कविए प्रभुना प्रभावनुं आलेखन करतां तेमना जीवनचरित्रनी साथे साथे अष्टप्रातिहार्यना स्वरूपनुं, तेमनी देहकांतिनुं तथा तेमनां गुणवैभवनुं आलेखन कर्युं छे, ज्यारे छेल्ला कळशमां प्रभुस्तवना आलेखी कृतिनुं समापन कर्युं छे।

संपादनगत पांचमी रचना कवि सकलचंदजीनी चंद्राउला संज्ञक रचना छे। वाचकोने ध्यानमां ज हशे के चंद्राउला पद्यनी कृतिनी बीजी पंक्तिना बीजा चरणनी तथा त्रीजी पंक्तिना पहेला चरणनी पुनरुक्ति द्वारा रचाय छे। अहीं कविए ए शैलीनो लाभ लई एक बाजु राजुलनी विरह वेदनाने वधु गाढी बनाववानो प्रयास कर्यो छे, तो बीजी बाजु टूंका तथा रसाळ शब्द प्रयोजी कृतिने निखारवानो पण प्रयत्न कर्यो छे। जो के तेवा शब्दप्रयोगोने कारणे कृतिमां क्यांक क्लिष्टता सर्जाय छे खरी बाकी कृति एकंदरे सुंदर छे।

प्रत परिचय

प्रस्तुत कृतिओनुं संपादन नीचेना ज्ञानभंडारोनी हस्तप्रतोना आधारे थयुं छे। खास संपादन माटे कृतिओ आपनार ते दरेक ज्ञानभंडारोना व्यवस्थापकोनो खूब खूब आभार।

(१)**कवि लावण्यसमयनी कृति**- तेमनी कृतिनी हस्तप्रत राधनपुरना लावण्यविजयजी हस्तप्रत संग्रहनी छे। सूर्य-दीप संवादनी प्रतमां पेटाकृति रूपे लखायेल आ कृतिओ प्रायः कर्ता द्वारा ज लखायेली छे। कृतिलेखकना अक्षर सुवाच्य छे।

(२) **कवि जयवंतसूरिनी कृति**- तेओनी रचनानी आ हस्तप्रत सुरतना नेमि-विज्ञान-कस्तूरसूरि ज्ञानमंदिरना हस्तप्रत संग्रहनी छे। कृतिना अक्षर मध्यम तथा सुवाच्य छे। लेखन अनुमाने १८ मी शताब्दीनुं होवुं जोईए।

(३) **कवि सकलचंदजीनी कृति**- तेमनी कृतिनी हस्तप्रत मुंबईना गोडी पार्श्वनाथ जिनालय (पायधुनी)ना हस्तप्रत संग्रहनी छे। जो के त्यां आ कृति हस्तप्रतना

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छूटा पानामां जोवा मळी हती। कृतिनुं लेखन अनुमाने १८मी आसपासनुं, मध्यम कक्षानुं तेमज कइंक अंशे अशुद्ध छे।

१) *लावण्यसमय मुनि कृत*
[प्रभु]पृच्छा गीत

॥८०॥ एक कहइ ब्रह्मा अह्म कुल कर्म, जैन भणी जिनराज ध्याइं।
एक गोरख इक अलख इक ईश्वर, एक वली गोविंद गाई ॥१॥
स्वामी एक हमारा एक पीआरा[१], एवडा अंतर कांइं दाख्या।
मुगतिनइं कारणि ज सहू ध्याइतु, एकइं मारगि कां न राख्या (आंकणी)
छ दरिसन्ननइं छन्नवइ पाखंड, जूजुआ अरथ-विचार बोलइ।
आपणा देवतणइ करइ कीरति, बीजानी निंदा निटोलइ[२] ॥२॥ स्वामी...
जूजुआ देवनइं जूजुई पातरी[३], मूरति जूजुअइं रंगि माडी[४]।
नव-नवी पइरि[५] प्रगट करी तइं प्रभु, जगत्र मूंकिउं जंजालि पाडी ॥३॥ स्वामी...
एक **सेत्रुंज हिंगुलाज हज**[६] मानइ, एक **गंगा गया** मन रमाडइ।
जूजुई वाटइं स्वामि शा माटइ, भोलूडा भगतनइं तूं भमाडइ ॥४॥ स्वामी...
मुनि लावण्यसमय भणइ शिवकर, अवर परंपर पाय लागुं।
परतखि[७] कइ सुपनंतरि सूधलउ[८], मारग दाखिवा मान मागुं[९] ॥५॥ स्वामी...

२) [प्रभु]प्रत्युत्तर गीत

ब्रह्मा ते हूं ब्रह्मसरूपी, अलख अरूपी कही वखाणउ।
आदीश्वर गोपाल गोरख इस्यां[१०], ए मुझ नामचा[११] भेद जाणउ ॥१॥
नहीं नहीं रे को दूजउ[१२] भगतजन बूझउ[१३], तेजका पूंज ते एक होई।
सहसकर हंस रवि नाम बहु जूजुआ, पणि परमारथि[१४] सूर[१५] सोई ॥२॥ नहीं(आंकणी)
देस देसांतरे अक्षर आंतरे, लोक जिम लिपि लिखइ बहु प्रकारे।
फिरि फिरि जोअतां फलपति[१६] एकजि, मूरति-नांम [म?]न तिम विचारे ॥२॥ नहीं...
कुषुम तीरथतणां मांड्या छइ मत घणां, आपणा चित्तसिउं सत्य जाणी।
तुहि[१७] ते मानवी कनक परि केलवी, अह्म गुण गाइं आणंद आणी ॥३॥ नहीं...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कूड कपट परनारि परनिंदा, राग नइं रोस बे दूरि छांडउ।
ए तुह्म दाखीउ सूधलउ मारग, जीवदया सथी[१८] रंग मांडउ ॥४॥ नहीं...

सूतला[१९] ध्यान धरि आज सुपनंतरि, देवचा देव परतख्यि दीठा।
मुनि लावण्यसमय हीइ हरखिला[२०], इस्या रे सुणाविला[२१] बोल मीठा ॥५॥ नहीं...

३) विमलाचल तीर्थ गीत

आज सखी ऊमाह लउ, हुं जाणुं **सेत्रुंजि** जाउं।
आदीश्वर अलवेसर भेटी, गिरूआना गुण गाउंजी ॥१॥

विमलाचलनी वाटइडी[२२], जोतां रंगि रसाली, श्रीसेत्रुंजगिरि वाटइडी...।
प्रिय वेलिइं बइसुं सेजवाली[२३], कइ वरि पहुचुं पाली[२४], श्रीसेतुंजगिरि वाटइडी (द्रुपद)
पगि पगि[२५] पातक दूरि टलइ, सुख संपति सवि पासइ।
सेत्रुंजगिरि जव नयणे दीसइ, तव दुरगति दोइ नासइजी ॥२॥ विमला...

जु पूजा जिनराजतणी, रूअडइ[२६] रंगि कराइ।
सागर सह[स]तणां जे संच्यां, पातक परहा[२७] जाइजी ॥३॥ विमला...

तीरथमाहे मूलइगुं[२८], श्रीशत्रुंजय जाणउ।
सिद्ध अनंता इणि गिरि सीधा, वली अनंत वखाणउजी ॥४॥ विमला...

चडवड[२९] सेत्रुंजगिरि चड्या, दीठा त्रिभुवनराया।
हिअडुं हरषिइं कुंपल[३०] मेल्हइ, लोचन अमिअ भरायाजी ॥५॥ विमला...

रायण रूख सोहामणुं, वरसइ दुगधि[३१] अपार।
आगइ आदि समोसरिआ जिहां, पूरव नवाणुं वारजी ॥६॥ विमला...

मारगि छइरी[३२] पालइतां, जे करिसिइ यात्रा सारी।
मुनि लावण्यसमय इम बोलइ, धन धन ते नर नारीजी ॥७॥ विमला...

४) जयवंतसूरि कृत

श्रीचिंतामणिपार्श्वजिन स्तवन

॥१६॥ श्री**चिंतामणि पास**, पूरइ अनुदिन[३३] आस।
सुर नर धरत उल्हास, गावत तुम्ह गुणरास[३४] ॥१॥

सोहइ मुख सुप्रकास, ससिहरनइं करइ हास[३५]।
तरणि-किरण[३६] संकास, तेजि तपइ तनु भास[३७] ॥२॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नाम जपंता ए जास, लहीइ लीलविलास ।
कमला[३८] करिइ घरि वास, त्रिभुवन कीरति विकास ॥३॥

सुरतरु संपजइ दास, न लहइ दुख-अवकास[३९] ।
विघननु हुइ विणास[४०], न पडइ दुरगति-पास ॥४॥

॥ श्रीसीमंधरस्वामि- ए ढाल ॥

श्रीचिंतामणि स्वामि, नामिइं नव निधि, निधि पामीइ ए ।
देव दयावर ईठ[४१], जिनजी दीठइ ए, जिन दीठइ दुख वामीइ[४२] ए ॥५॥

पाली **प्राणति** आय, श्रीजिननायक, श्रीजिननायक गुण भर्या ए ।
श्री**अश्वसेन** नरेश, वंस **इखाग** ए, नयर **वाणारसी** अवतर्या ए ॥६॥

वामा- तनय[४३] सलील, नीलमणि मरकत, सरिस कंति करी दीपतु ए ।
प्रभावती- प्राणनाथ, नाथ निरंजन, मनसिज[४४] तन मन जीपतु ए ॥७॥

नाग करिउ नागराज, दारुमहइं[४५] ठीय[४६], शठ **कमठ**सुर हठ[४७] हणी ए ।
केवल लहइ अनंत, अव्याघात ते, घातिकरम सवि निरजणी[४८] ए ॥८॥

॥ सीमंधरजिन त्रिभुवनभाणुं- ए देशी ॥

मणिमय सोविन सिंहासन सोहइ, तिहां बइठा जिन जग मन मोहइ ।
जीती शारद-ससिकर-कंति, पूंठिइं भामंडल झलकंति[४९] ॥९॥

मुक्ताजाल-कलाप[५०] पवित्र, प्रभु सिरिं सुंदर तीनि सुछत्र ।
अमरकुमर चालइ चमराली[५१], मानुं मुख कज[५२] भजति मराली[५३] ॥१०॥

कुसुमपगर[५४] सुर-विहित[५५] महंत[५६], जानु प्रमांण अधोगत वृंत[५७] ।
जस तलि बइठइं जाइ शोक, ते प्रभु पूंठइं ऊच्च अशोक ॥११॥

संशय-वेलितणी रे कृपाणी[५८], जलद-गंभीर[५९] धीर जिनवाणी ।
कीरति-पटह[६०] जाणे ए वागइ, सुरदुंदुभि निनदइं[६१] तुह्म आगइ ॥१२॥

॥ ढाल ॥

सोहइ सोवन सेहर[६२]-सीसइं रे, मणिमंडित मनोहर दीसइ ।
रतनालुं[६३] अतिरंगीलुं रे, तुह्म भालि भजिइ भल टीलुं ॥१३॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

योति-जीता[६४] रवि ससि लोए[६५] रे, मणिकुंडल श्रवणे दोए।
रतनालां अतिअणीआलां रे, त्री(त्रि?)रंगा नयण विशालां ॥१४॥

चांदलडा[६६] दोए गाले रे, हठ मंडइ अधर प्रवाले।
उरि श्रीवच्छ श्रीसोभागी रे, लाखीणी अंगिइं आंगी ॥१५॥

कंठि कांठि[६७] मोतिन हारा रे, चांपो टोडर[६८] तेजि उदारा।
बांहि बहिरखा बाजूबंध रे, प्रभुनि(न?)इ कुसुमगेह सुगंध ॥१६॥

॥ ढाल ॥

तुं जगगुरु जगविभु, माय ताय सहाय।
परमारथ बंधव, जगजीवन जिनराय ॥१७॥

शरणागतवच्छल, अडवडीआ[६९] आधार।
अनोपम अकलंकी, अजम अमर अविकार ॥१८॥

तुं दीठइ ऊलटइ[७०], आनंद-सागर-वेलि[७१]।
मन-माकुंद[७२] मुरइ[७३], हईयडउं दिइ अतिहेलि ॥१९॥

धन धन ए वेला, धन घडी धन दीह।
तुह्म सेवा करंतां, सफल फलइ सवि ईह[७४] ॥२०॥

कलस- ईय सकल **गुण-सोभागसुंदर** महिममंदिर सुहकरो,
दुहवेलि-सिंधुर कीर्ति-बंधुर नाग सुभ लंछनधरो।
जयवंतसूरिवर थुणइ तुह्म गुण सुभग समरथ तुं धणी,
नितुं उदयकारी विघनवारी जयु पास चिंतामणी ॥२१॥

५) *सकलचंद मुनि कृत*

नेमिनाथ चंद्राउला

॥१६८॥ तोरणथी प्रभु कांई वलिउ रे, पसूयां देई दोसो।
हुं अबला कांई परिहरी रे, विण अवगुण स्यु रोसो॥
विण अवगुण प्रीय रोस न कीजइ, **नेम** निहाली नेह धरीजइ।
मया करु मुझ ऊपरि सांमी, **राजीमती** बोलइ सिर नांमी ॥१॥
जी **यादव**रायजी रे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पूरव प्रीति संभारि दोइ कर जोडीइ रे, प्रमदा सरिसु प्रेम नाह न छोडीइ रे(आंचली)
रंग-सुरंगी गोरडी रे, क्षणह न मूंकी जाऊ।
विरह-विलूधी[७५] वीनवउं रे, तुझनइं महिर[७६] न थाऊ ॥
तुझनइं महिर न थाइ रे स्वामी, अष्ट भवंतरि प्रीति ज पामी।
नउमि[७७] जउ तूं जायसि[७८] वाही[७९], मुहूं राखिसि बाहि[८०] साही[८१] ॥२॥ जी...

सामलवन्न सोहामणउ रे, तुझसिउं बांधिउ नेहो।
नाह विना न सकूं रही रे, कांई दमि मुझ देहो ॥
कांई दमि वाहलेसर देहो, तुं मूंकि मुझ कारणि केहो[८२]।
देव दयापर दासि(सी) तुम्हारी, आवी आस्या पूरउ हमारी ॥३॥ जी...

दिवस दोहेलइ[८३] नीगमउं[८४] रे, रयणी रोतां विहाऊ[८५]।
मन जांणइ मन वातडी रे, कहि आगलि न कहाऊ ॥
कहि आगलि न कहाय किवाहरि[८६], चंदन चंद्र तपइ तिवारइ(रि)[८७]।
विरह-वेदना विरूई[८८] वहीइ, सामलीया विण किमि(म?)हि न रहीइ ॥४॥ जी...

बांधऊ ऊचि हीचता रे, हींडोला तस खाटो[८९]।
फूल-तलाई[९०] पाथरी रे, ऊभी जोऊं वाटो ॥
ऊभी जोऊं वाट सुहेजिं[९१], पेखि पनुता[९२] आवओ सेजि[९३]।
बांहि बलसिउं [ग]हीय रीजइ, रंगि रमणि रमी रस लीजइ ॥५॥ जी...

असूं(स्यूं) देखि(खी) जागी जसि रे, जोऊं तव नवि कोई।
नयणे नीर झरइ[९४] घणूं रे, रयणी विरणि[९५] होऊं(ई?) ॥
रयणी विरणि होय तिह्वारि, वीसारी जोऊं किह्वारि।
बापीयडु[९६] प्रीयडु पोकारइ, जागी विरह देह संतोपि(पइ?) ॥६॥ जी...

जव सूउ तव जागवइ[९७] रे, जव जागुं तव जाऊ।
इणि परि सूहणि[९८] भोलव्या रे, किम जीवीसइ माऊ[९९] ॥
किम जीवीसि(सइ) सहीयरि बाई, राजीमती रही आडु[१०१] साही।
वेधि(?) विलाई[१०२] वेदना दीधी, पेखि पनुता परिवसि कीधी ॥७॥ जी...

जोवनि माती जोडली रे, जु कीधी किरतारो।
आव्या फल किम मूंकीइ रे, भोगवीय(इ?) भरतारो ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भोगवीइ भरतार भली परि, आसन वास करीय बहु परि ।
पांमी प्रमदा प्रेम रसाली, लाहु लीजइ नेम निहाली ॥८॥ जी...

कंथ-विहूणी कामिनी रे, पगि पगि चडइ कलंको ।
छयल[१०३] पुरुषनइं छांडतां रे, लोक कहेसि रंको[१०४] ॥
लोक कहेसि रंक ज सांमी, नीठर[१०५] नाह थयु निःकामी ।
आ प्रभु भोगतणी छइ वेला, पछि जोग करेयो भेला ॥९॥ जी...

योवनि माती गोरडी रे, सभर[१०६] भरी अपारो ।
आव्या थाल किम मूंकीइ रे, कंता करिन[१०७] विचारो ॥
कंता मुझसिउं म करसि जोरी[१०८], अंगणि सफल फली बीजोरी ।
भोगवि भोगतणी परि जांणी, गिरिकिंदि(कंद?)रि कुण सेवइ प्रांणी ॥१०॥ जी...

तुजकु कू(कु)ण धूतारी मिली रे, तिणि धूतारिओ नाहो ।
मुझ मन ऊतारी करी रे, मुगतिरमणि उछाहो ॥
मुगतिरमणि मन वाली वाहिओ[१०९], केम करुं सखी न रहइ साहिओ[११०] ।
बालकूंयारी बहु नर सेवइ, सोइ नारी किसी परि लेवइ ॥११॥ जी...

लालचि लाखगमे[१११] करी रे, कीधु नवि नरवाहो[११२] ।
अंगणि प्रीउ आवी वलिउ रे, नेमीसर नरनाहो ॥
नेमीसर नरनायक वलीओ, **सकलचंद** सांमी सामलीओ ।
ऊजलगिरि आवी निज नारी, राजीमती भवसायर तारी ॥१२॥ जी...

शब्दकोश

१. पारका, २. अवश्यपणे करे, ३. पांदडामां वाळेलो फूलनो बीडो, ४. स्थापी, ५. स्थिति, दशा, ६. मुसलमानोनी यात्रा विशेष, ७. प्रत्यक्ष, ८. साचो, ९. विनंती करुं, १०. आवां, ११. नामना, १२. बीजो, १३. बोध पामो, १४. खरेखर, १५. सूर्य, १६. ?, १७. तो पण, १८. साथे, १९. सूता, २०. हरख्या, २१. संभळाव्या, २२. वाट, २३. पालखी, २४. , २५. पगले-पगले, २६. रूडे, २७. दूर, २८. मूळगु, २९. उत्साहथी, ३०. कुंपळ, ३१. दूध, ३२. छरी, ३३. हंमेश, ३४. गुणनो भंडार, ३५. उपहास, ३६. सूर्यकिरण, ३७. कांति(?), ३८. लक्ष्मी, ३९. ?, ४०. नाश, ४१. ईष्ट, ४२. दूर करे, ४३. वामानो पुत्र, ४४. कामदेव, ४५. लाकडुं, ४६. स्थित, ४७. जीद, ४८. नाश करी, ४९. झबकार करे, ५०. मोतीनी जाळनो समुदाय(?), ५१. चामरोनी श्रेणी, ५२. मुखरूपी कमळ, ५३. हंस, ५४. पुष्पोनो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ढगलो, ५५. देवो वडे करायेल, ५६. मोटो, ५७. वृक्ष, ५८. तलवार, ५९. मेघ समान गंभीर, ६०. कीर्त्तिनो ढोल, ६१. वागे, ६२. सुवर्णनो मुगट, ६३. रत्ने जडेलुं(?), ६४. ज्योति वडे जीत्या, ६५. लोकमां, ६६. चंद्र, ६७. एक प्रकारनो हार(?), ६८. डमरो, ६९. लथडतां जनोना, ७०. उभराय, ७१. आनंदसागरना कल्लोल, ७२. मनरूपी आम्रवृक्ष, ७३. महोरे, ७४. ईच्छा, ७५. विरहमां मग्न, ७६. दयावाळा, ७७. नवमे, ७८. जईश(?), ७९. लई(?), ८०. हाथ, ८१. ?, ८२. कयुं, ८३. कपरो, ८४. पसार करुं, ८५. पूरी करुं, ८६. क्यारे, ८७. त्यारे, ८८. विरूप, खराब, ८९. पलंग(?), ९०. फूलनी शैया, ९१. सारा हेत पूर्वक, ९२. भाग्यशाळी, ९३. शैयामां, ९४. वहे, ९५. वैरिणी, ९६. चातक, ९७. जगाडे, ९८. स्वप्नमां, ९९. भोळव्या, १००. माता(?), १०१. लाकडुं हठ(?), १०२. ?, १०३. रसीक, १०४. गरीब, १०५. निष्ठुर, १०६. पूर्ण(?), १०७. करने(?), १०८. जोर, बळ, १०९. खेंचायेल, ११०. पकडायेल, १११. लाखो प्रकारे, ११२. निर्वाह.

❋ ♦ ❋

(अनुसंधान पेज नं ३१ पर से)

प्रस्तुत ग्रंथ में संकलित सूचनाओं के आधार पर समाज के अग्रणी महानुभावों की ओर से यह कदम उठना चाहिए कि जो भंडार प्राचीन काल से समृद्ध रहे हैं और आज बन्द प्रायः पड़े हैं उनको पुनर्जीवित करके सक्रिय किया जाए।

इस पुस्तक में संकलित सभी लेख महत्त्वपूर्ण हैं। भविष्य में यदि किसी संघ को नए भंडार की स्थापना करनी होगी तो यह पुस्तक उनके मार्गदर्शक का कार्य करेगा। अन्त में इतना कहा जा सकता है कि यह ग्रंथ अपने आप में एक सुव्यवस्थित संदर्भ ग्रंथ है। अर्वाचीन से लेकर प्राचीन काल तक के मध्य में स्थापित एवं सक्रिय ज्ञानभंडारों का संपूर्ण विवरण इस एक ही ग्रंथ में उपलब्ध है।

प्रस्तुत प्रकाशन के संपादन एवं प्रकाशन में आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर, कोबा, गांधीनगर की ओर से अनेक महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ उपलब्ध करवाकर सराहनीय योगदान दिया गया है। आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर, कोबा पूज्य मुनिश्री हितार्थरत्नविजयजी के इस कार्य की अनुमोदना के साथ अनेकशः वन्दना प्रेषित करता है।

आशा है पूज्यश्रीजी भविष्य में इसी प्रकार उत्तम साहित्य का सृजन करते हुए संयमजीवन की उच्चता को प्राप्त करेंगे।

अन्त में पूज्यश्रीजी के इस कार्य की सादर अनुमोदना के साथ कोटिशः वंदन।

❋ ♦ ❋

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आगम प्रभाकर मुनिराज श्री पुण्यविजयजी महाराज - उत्कट ज्ञानसाधना अने सौम्य सत्यसाधना

डॉ. कुमारपाळ देसाई

(गतांकथी आगळ..)

उत्कट ज्ञानसाधना अने सौम्य सत्यसाधनाना समन्वयथी संशोधन अने संपादनना क्षेत्रमां मुनिराज पुण्यविजयजीए एक नवो मापदंड रची आप्यो। १३ वर्षनी नानी वये पोताना दीक्षाजीवनना प्रारंभनी साथोसाथ अध्ययन करवानुं शरू करी दीधुं। पोताना गुरु मुनि चतुरविजयजी, दादागुरु मुनि कांतिविजयजी, प्रज्ञाचक्षु पंडित सुखलालजी संघवी वगेरे पासेथी पुण्यविजयजीए संस्कृत तथा प्राकृत ग्रंथो, जैन तत्त्वज्ञान, भारतीय दर्शनो वगेरेनो ऊंडो अभ्यास कर्यो। आ महत्त्वना ग्रंथोना अध्ययननी साथोसाथ एमणे संशोधन तथा संपादनना कार्यनी शरूआत करी। आ समयगाळामां एमणे "कौमुदी-मित्रानंद नाटक (१९७७), प्रबुद्ध रौहिणेय' (१९१८), धर्माभ्युदय-छायानायक (१९१८), 'ऐन्द्र-स्तुति चतुर्विंशतिका' (१९२८) इत्यादि ग्रंथोनुं संपादन कर्युं हतुं। "बृहत् कल्पसूत्र निर्युक्ति अने टीका' (छ भाग-१९३३-१९४२), 'वसुदेव हिंडी' (१९३०-३१), 'अंगविज्जा' (१९५७), आख्यानक मणिकोष' (१९६२), 'कल्पसूत्र' (१९५२), नंदिसूत्र (१९६६) इत्यादि ग्रंथोनुं संपादन करवाने कारणे संपादक तरीके जाणीता बन्या। पोताना गुरुवर्य साथे बीजा विद्वानो साथे तेम ज एकले हाथे महाराजश्रीए जैन आगमो, अन्य प्राचीन जटिल जैन शास्त्रीय तेमज बीजा ग्रंथो अने इतर साहित्यना ग्रंथोनुं जे संशोधन-संपादन कर्युं छे, ते तेओनी मध्यस्थवृत्ति, समभावपूर्णता, सत्यनी शोधनी तालावेली अने प्राचीन कठिन ग्रंथोने समजवानी सिद्धहस्ततानुं सूचन करे एवुं छे। तेओए संशोधित-संपादित करेला ग्रंथोए दुनियाना विद्वानोनी प्रशंसा मेळववा साथे संशोधनकळाना श्रेष्ठ नमूना तरीके पण तेओ जाणीता छे।

मुद्रित पुस्तको होय, तो तेना पण पाठभेद नोंधवानुं अने एना भ्रष्टपाठ सुधारवानुं एमनुं कार्य सतत चालु ज रहेतुं। आवा मुद्रित-संशोधित ग्रंथोनो पण एक संग्रह मळे छे, जेमांथी संशोधकोने उपयोग आवे तेवी विपुल सामग्री प्राप्त थाय छे।

जैन आगमोनो अद्यतन पद्धतिथी अभ्यास करी तेमनी पुनर्वाचना करी, तेमांय जैन आगमो अंगेनुं महाराजश्रीनुं ज्ञान तो जेटलुं ऊंडुं एटलुं ज व्यापक अने मूळगामी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हतुं। एकबीजां आगमसूत्रो वच्चेना आंतरप्रवाहोना तो तेओ अनन्य ज्ञाता ज हता। आगमप्रकाशन माटे तेओ जुदा जुदा ग्रंथभंडारो तपासता अने तेनी प्राचीन संशोधित-शुद्ध नकलनी शोध करता, संपादनने माटे योग्य प्राचीन हस्तप्रतनी सारी नकल मळे, तेना उपरथी तेनी नकल करता-करावता। तेमणे लाखो श्लोकोनी नकलो करी-करावी छे तेमज पाठभेदो नोंधाव्या छे। आगमग्रंथोना प्रकाशन माटेनो तेमनो आ पुरुषार्थ यशकलगी समान हतो। आ माटे महावीर जैन विद्यालये ई. स. १९६१ (वि. सं. २०१७) मां तेमना मार्गदर्शन हेठळ मूळ आगमसूत्रोनुं प्रकाशन करवानी योजना अमलमां मूकी।

श्री पुण्यविजयजी महाराज तथा एमना गुरु श्री चतुरविजयजी महाराज अने प्रवर्तक श्री कांतिविजयजी महाराजे मळीने लींबडी, पाटण, खंभात, वडोदरा, भावनगर, पालिताणा, अमदावाद, जेसलमेर, बिकानेर, जोधपुर उपरांत गुजरात-सौराष्ट्र अने राजस्थानना संख्याबंध ग्रंथभंडारोने तपासी एमने व्यवस्थित कर्या। ए पछी तेओए पोताना दादागुरु श्री कांतिविजयजी महाराज तथा गुरु मुनिवर्य श्री चतुरविजयजी महाराजना स्वर्गवास बाद तेओना पगले पगले जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघना संख्याबंध प्राचीन हस्तलिखित ज्ञानभंडारोनो नमूनेदार जीर्णोद्धार कर्यो-कराव्यो हतो। आ जीर्णोद्धारमां मात्र हस्तलिखित प्रतोने सुरक्षित बनावीने ज संतोष मान्यो नहीं। केटलाकनी यादी तैयार करी आपी, तो वळी ए पुस्तकोनुं माहितीपूर्ण सूचिपत्र तैयार करीने ए पुस्तको एनो उपयोग करवा इच्छता विद्वानोने ओछामां ओछी मुश्केलीथी मळी शके, एवी व्यवस्था करी। केटलाक ज्ञानभंडारोमांनां पुस्तकोनी सूचिओ तो तेओए स्वयं परिश्रमपूर्वक मुद्रित पण करी छे, जेथी देशविदेशनां जुदां जुदां स्थानोमां रहेता विद्वानो क्या भंडारमां केवां केवां पुस्तको अने हस्तप्रतो छे, तेनी माहिती आसानीथी घेरबेठा मेळवी शकता।

सामान्य रीते सूचिपत्र एटले पुस्तकनुं नाम, कर्ता, भाषा, विषय अने पत्रसंख्या के रचनानो के लेखननो समय लखवो अथवा ते लभ्य के अलभ्य छे तेनी नोंध करवी वगेरे होय। घणा विद्वानोए आ प्रकारे कार्य कर्युं छे, परंतु आगमप्रभाकर मुनि पुण्यविजयजीए भेळसेळ थई गयेला पत्रोने पाठनो संबंध मेळवीने व्यवस्थित करवा, पत्रो गणीने घटता के बेवडा अथवा भेगा पत्रो नोंधवा, पत्रोनी किनारी वळी गई होय तेने सावचेतीपूर्वक सीधी करवी, कोई पत्र जीर्ण होय, तो तेने कुशळतापूर्वक सांधवुं अने एक पत्र के अनेक पत्रना ग्रंथने तेना कद प्रमाणे कागळनुं वेष्टन लगावी तेना

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपर ग्रंथनाम लखी, एक मापना ग्रंथो एक साथे राखी तेने बे बाजु पूठां मूकी कपडाना बंधनमां के लाकडाना डब्बामां साचववानी व्यवस्था करवी अने पछी ग्रंथक्रमांक लखीने कबाटमां गोठववुं - आ बधुं कार्य पुण्यविजयजी महाराजे एकले हाथे कर्युं छे। आवी हती एमनी ज्ञानोपासना !

आवी ज रीते प्राचीन ग्रंथोनां मुद्रित पुस्तको जर्जरित होय, ऊधईथी खवायेलां होय, बीजा ग्रंथोना पत्रो भळी गया होय, पत्रांक बेवडा होय अथवा पत्रांक भूलथी छूटी गया होय के पत्रांक छपाई गया होय - आवी बधी बाबतो एना पत्रो गणतां सामे आवे छे। ते कार्य घणी कुशळता अने धीरज मागे छे। ए पत्रो उपर चोटेली धूळ खंखेरवाथी मांडीने छेक पोथी बांधवा सुधीनां बधां ज कार्यो पुण्यविजयजी महाराजे जाते कर्यां हतां।

मजानी वात तो ए छे के पू. पुण्यविजयजी महाराज पेन, पेन्सिल, रब्बर, गुंदरपट्टी, छरी, कातर, फूटपट्टी जेवी चीजो एटली सफाई अने सुघड रीते गोठवीने राखता हता के तेमना बोक्समां – नानी पेटीमां तेमना हाथे गोठवायुं होय, ते जो बहार काढीने फरीथी तेमां भरीए तो समाय ज नहीं !

हकीकतमां तो जेसलमेरमां ताडपत्रीय पुस्तकोने एकबीजा साथे भेळसेळ करवानुं कार्य घणा लोको द्वारा थयुं हतुं, किंतु ए भेळसेळ थयेलां पत्रोने ग्रंथबद्ध करवानुं कार्य तो मात्र पुण्यविजयजी महाराजे ज कर्युं छे।

लहियाओ पासे काश्मीरी कागळ उपर ग्रंथो लखावी तेने सुधारवानुं काम तेओ स्वयं करता हता। ला. द. भेट नं. १०४९थी १०५६, बृहत्कल्पसूत्र निर्युक्ति-भाष्य टीकासह पत्र १७६७, उद्देशक १-६- ग्रं. ४२६००. आ प्रति पूज्य पुण्यविजयजी महाराजे स्वहस्ते संशोधित करेली छे।

आ उपरथी एम सहेजे कही शकाय के महाराजश्रीने ज्ञानभंडारोने सुरक्षित बनाववानी जेटली धगश हती, एटली धगश तेओने ज्ञानभंडारोनो उपयोग सहेलाईथी थई शके एवी व्यवस्था करवानी पण हती। आ माटे तेओए खूब जहेमत उठावी हती, वळी क्यांक रेपरो, बंधनो, डाबडा के पेटीओ अने कबाट सुध्धांनी व्यवस्था करी आपी। नामशेष थता केटलाय प्राचीन ग्रंथभंडारोने व्यवस्थित करीने जाळवी लीधा। आ माटे तेमणे जे परिश्रम कर्यो छे अने तेने माटे कपरा विहारो कर्या छे ते घटना श्रुतरक्षाना इतिहासमां सोनेरी अक्षरे अंकित थई रहे एवी छे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेमांये जेसलेमेरना भंडारोनी साचवणी माटे सोळ सोळ महिना सुधी तेओए जे संशोधन-तप कर्युं छे एनो इतिहास तो अत्यंत रोमांचक ने प्रेरक छे।

वि. सं. २००६ना कारतक वद सातमे श्री पुण्यविजयजी महाराजे जेसलमेर जवा माटे विहार कर्यो। आ वखते श्री कस्तूरभाई लालभाई पुण्यविजयजी महाराजने साबरमतीमां मळ्या हता। ते पछी महाराजश्री जेसलमेरमां काम करता हता त्यारे तेओ जेसलमेर जईने चारेक दिवस त्यां रोकाया हता। अहीं एमणे श्री पुण्यविजयजी महाराज द्वारा थई रहेल कामने प्रत्यक्ष जोयुं; उपरांत क्यारेक तेओने पाटण जवानुं थतां त्यांना श्री हेमचंद्राचार्य जैन ज्ञानमंदिरनुं एमणे निरीक्षण कर्युं। आ बधांने लीधे एमना मनमां ज्ञानभंडारोना रक्षण अने भारतीय संस्कृति तथा जैन संस्कृतिना अध्ययन माटे कंईक नक्कर काम करवानी भावनानां बीज रोपायां। एनुं परिणाम अंते अमदावादमां लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिरनी स्थापनामां आव्युं।

पुण्यविजयजी महाराजनो संशोधन प्रेम, भावना अने श्री कस्तुरभाई लालभाईना श्री अने उदारताना संगमने तीरे श्री लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर जेवी एक जाजरमान विद्यातीर्थनी स्थापना वि. सं. २०१३ना विजयादशमीने शुभ दिवसे थई।

महाराजश्रीए पोताना हस्तलिखित अने मुद्रित वीसेक हजार ग्रंथोनो अमूल्य खजानो ए संस्थाने भेट आपी दीधो। आ संस्थाने तेओनी प्रेरणाथी त्रीस जेटला पुस्तक भंडारो प्राप्त थया। वळी भेट रूपे आवेला ए तमाम ग्रंथोनुं एमणे स्वयं निरीक्षण पण कर्युं। एमनी देखरेख हेठळ संस्था द्वारा हस्तलिखित ग्रंथोनी खरीदी थती। केटलाक यतिओ, महात्माओ पंडितो तथा वेपारीओ तेमनां पुस्तकोनां पोटलां लईने आवता तेमांथी प्रत्येक ग्रंथ जाते जोई लेता। लिपिनी दृष्टिए, शुद्धतानी दृष्टिए, लेखनसमयनी दृष्टिए, अलभ्य-दुर्लभ्य, प्रकाशित अप्रकाशित, कर्तानी स्वलिखित वगेरे अनेक प्रकारे आ ग्रंथो ध्यानथी जोईने पसंद करता। त्रुटक पत्रो चकासीने एनी यादी करता। तेओ अत्यंत उत्साहभेर आ कार्य करता अने सहेजे थाक लागतो नहीं।

वळी कोई ज्ञानभंडारमां हस्तलिखित भेळसेळ थयेलां त्रुटक पुस्तकोनां पत्रो पड्यां होय, तो तेना ट्रस्टीओ के मुनिराजो ते बधुं पोटलुं बांधीने अमदावादमां लुणसावाडानी पोळमां आवेला उपाश्रयमां मोकलावता। आवां पत्रोनो क्रम मेळववो, तेमांथी उपयोगी होय ते जुदुं तारववुं। जे पत्रो चोंटेलां होय ते उखेडवां, ऊधईथी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खवाई गयेली किनारो कातरथी कापी नांखवी, फाटेलुं सांधवुं, आवां सघळां कामो करतां तेओ कदी कंटाळता नहीं। आवां तो केटलाय कोथळा भरीने पुस्तको तेमणे तपास्यां छे। लालभाई दलपतभाई भारतीय विद्यामंदिरने जे हजारो हस्तप्रतो पू. महाराजसाहेबे भेट आपी, तेमांनी घणी आवा त्रुटक संग्रहोमांथी विसर्जन करवाना ढगलाओमांथी मेळवी छे।

पाटणना ज्ञानभंडारोनी माईक्रोफिल्म लेवानुं नक्की थयुं ते समये पूज्य पुण्यविजयजी महाराजे जाते पाटण आवीने पुस्तको पसंद कर्या। ताडपत्रोमां रहेली धूळ-छेपट साफ करावी, दरेक ग्रंथनो परिचय लखावीने तेमनी अध्यक्षतामां ज फिल्म लेवडावी हती। आवां कार्योमां तेमनी चीवट जोवा मळती अने आवो परिश्रम करतां सहेजे थाक के कंटाळो अनुभवता नहीं।

पुस्तक प्रदर्शननुं आयोजन थयुं होय, त्यारे तेओ जुदा जुदा अनेक भंडारोमां रहेलां ताडपत्रीय अने कागळनां मूल्यवान पुस्तको मंगावता, तेनी यादीओ तैयार करता, एने विभागवार गोठवीने एनुं अनेक महत्त्व समजावता परिचयो तैयार करता, ते बधाने शो-केसमां गोठववां - ए सघळुं काम चीवटथी करता। वळी, पुस्तक प्रदर्शन पूरुं थतां आ बधी सामग्री ज्यांथी आवी होय त्यां बरोबर पहोंचती करावानी गोठवण करता। आवां कार्योने माटे सघळो भार पोते उपाडी लेता। तेमनी व्यवस्था अने चीवट एवी के क्यारेय कोई वस्तु खोवाई नथी।

अमदावादमां टाउनहोलमां वडोदरामां आत्मानंद जैन ज्ञानमंदिरमां, कपडवंजमां श्री अभयदेवसूरि जैन ज्ञानमंदिरमां अने भावनगरमां श्री आत्मानंद जैनसभाना मकानमां आवां प्रदर्शनो तेमनी अध्यक्षतामां थयां हतां।

जेसलमेरना भंडारोना उद्धार दरमियान राष्ट्रपति बाबु राजेन्द्रप्रसादनुं ध्यान आवी अमूल्य साहित्यसमृद्धि तरफ अने खास करीने ते प्राकृत भाषाना ग्रंथो प्रगट करवा तरफ गयुं। एने परिणामे प्राकृत टेक्स्ट सोसायटीनी स्थापना करवानुं शक्य बन्युं।

आ प्राचीन ग्रंथो अने एना भंडारोनी जाळवणी केवी रीते करवी ए बाबतमां पुण्यविजयजी महाराज अत्यंत निपुण होवाथी एमना हाथे जे जे भंडारोना उद्धार थया, ते चिरकाळ माटे सुरक्षित बनी गया। शक्य होय त्यां आवा भंडारोनो विद्वानो सहेलाईथी उपयोग करी शके एवी गोठवण पण अचूक करता।

पाटणमां श्री हेमचंद्राचार्य जैन ज्ञानमंदिर नामे अनेक हस्तप्रतो अने ग्रंथो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धरावता ग्रंथभंडारनी स्थापना थई अने तेनुं उद्घाटन वि. सं. १९९५मां श्री कनैयालाल माणेकलाल मुनशीना हस्ते थयुं, विद्वानो अने अभ्यासीओ माटे पाटणमां एक विद्यानी परब शरू थई। ज्ञानभंडारोना उद्धारनुं प्राचीन हस्तप्रतोनी साचवणीनुं अने प्राचीन शास्त्रीय ग्रंथोना संशोधननुं काम तो, धूळधोयाना धंधानी जेम, उत्कट खंत, अपार धीरज अने अनन्य श्रुतभक्ति मागी ले एवुं अत्यंत कठिन काम गणाय। अन्य कार्योनी वच्चे पण आ कार्यमां खंत अने एकाग्रता साथे एमणे करेलुं काम संशोधकोने माटे आदर्शरूप गणाय तेवुं छे।

जैन विद्या के भारतीय विद्याना विद्वानो, विद्यार्थीओ अने जिज्ञासुओ माटे तो तेओ ज्ञानकोश ज हता। तेओने जोईती माहिती सामग्री अने क्यारेक तो खर्चमां पूरक थई रहे एवी सहाय पण महाराजश्री पासेथी मळती; उपरांत, कोई कोई ग्रंथनी विरल हस्तप्रत पण महाराजश्रीनी पोतानी जवाबदारी उपर ज्ञानभंडारोमांथी मळी रहेती। महाराजश्रीनी हंमेशां ए झंखना रहेती के कोई पण विद्याना साधकनी साधना जरूरी माहिती, सामग्री के सहायना अभावे रूंधावी न जोईए। आ क्षेत्रनी महाराजश्रीनी कामगीरी उदारतानो एक उत्तम नमूनो बनी रहे एवी छे।

विद्वानो अने संशोधकोने सघळी सहाय करवानी एवी तत्परता दाखवता के पोते आ काम करे के अन्य कोई करे, ते एमने मन सरखुं हतुं। ज्ञानोद्धारमां अने ज्ञानप्रसारमां तेओने एवो जीवंत रस के बीजाने पण एमना संशोधन-संपादनकार्यमां सघळी सगवड मळी रहे एनी सतत चिंता करता। वळी गंभीर काममां एकाग्र थया होय, पण कोई जिज्ञासु आवे तो तेओ लेश पण कृपणता कर्या वगर पूरेपूरो समय आपता। वळी एमने कोई विषयमां पूछवामां आवे तो एमनी विशाळ विद्याप्रतिभानां तरत ज दर्शन थतां। एमनुं बहुश्रुतपणुं के शास्त्रपारगामीपणुं जोईने सहु कोई आश्चर्यमुग्ध बनी जता।

जैन विद्याना अध्ययन-संशोधनमां देशविदेशना विद्वानोने उदारताथी सहाय करवानी जे उपयोगी प्रवृत्ति स्वर्गस्थ आचार्य श्री विजयधर्मसूरीश्वरजी महाराजे व्यवस्थितपणे शरू करी हती तेनुं सातत्य मुनिश्री पुण्यविजयजीए साचव्युं हतुं।

वळी आवा ज्ञानोद्धारना कार्यमां जेना वगर चाले नहीं एवा लहियाओ तैयार करवानी दिशामां पण महाराजश्रीए, तेम ज एमना गुरुश्री अने दादागुरुश्रीए, जे कामगीरी बजावी हती ते तेओनी दीर्घद्रष्टि अने विद्यासाधनानी तीव्र झंखनानुं सूचन करे एवी छे। अत्यंत मुश्केलीथी उकेली शकाय एवी लिपिओमां लखायेली शास्त्रीय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेम ज बीजा अनेक विषयोनी प्राचीन हस्तप्रतोने उकेलवानुं अने तेनी शुद्ध अने स्वच्छ नक्ल करवानुं काम खूब ज मुश्केल छे। आजे तो निपुण लहियाओनी संख्या दिवसे दिवसे ओछी थती जाय छे। आ अंगे भो.जे. विद्याभवन द्वारा अमदावादमां गुजरात युनिवर्सिटीमान्य हस्तप्रतविद्याना छ महिनाना डिप्लोमा अभ्यासक्रमनुं आयोजन अवारनवार थाय छे, परंतु ग्रंथभंडारोमां रहेली ए विपुल हस्तप्रतोने उकेलवा माटे आ क्षेत्रमां भगीरथ प्रयासनी आवश्यकता छे।

वळी प्राचीन प्रतो अने ग्रंथभंडारोना संरक्षणनी कलानी विशिष्ट जाणकारीनी साथोसाथ प्रतोने अने ग्रंथस्थ तेमज अन्यचित्रसामग्री के प्राचीन कळामय वस्तुओने पारखवानी महाराजश्रीनी शक्ति पण अद्भुत हती। उपरांत कई प्रतनुं कई दृष्टिए शुं मूल्यांकन करी शकाय एनी पण तेओ स्पष्ट समज धरावता हता। आवा अनेक विषयोना पारगामी विद्वान होवा छतां तेओ क्यारेय पोतानी पंडिताई के वाक्चातुरीथी कोईने आंजी नाखवानो प्रयत्न करता नहीं। अंतरमांथी वहेती एमनी सहज सरळ वाणी जाणे सामी व्यक्तिने वश करी लेती।

संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, मध्यकालीन गुजराती, जैनदर्शन अने तत्संबंधी अनेक विषयोनो तलस्पर्शी अभ्यास करनार एवा मुनि पुण्यविजयजीनी ज्ञानोपासनानुं सन्मान गुजरातनी विविध संस्थाओए कर्युं हतुं। गुजराती साहित्य परिषदनुं २०मुं अधिवेशन १९५९मां अमदावादमां मळ्युं। तेमां इतिहास तथा पुरातत्त्व विभागना अध्यक्ष तरीके तेमनी पसंदगी करवामां आवी हती। भावनगरनी यशोविजय जैन ग्रंथमाळानो विक्रम संवत २००९नो विजयधर्मसूरि जैन साहित्य सुवर्णचंद्रक मुनिजीने एनायत करवामां आव्यो हतो। एकवीसमी ओल इन्डिया ओरियेन्टल कॉन्फरन्स ई. स. १९६१मां काश्मीरना पाटनगर श्रीनगरमां मळी हती। तेमां प्राकृत तथा जैन धर्मना विभागना अध्यक्ष तरीके तेमनी वरणी करवामां आवी हती।

युनाईटेड स्टेट्स ओफ अमेरिकानी धी अमेरिकन ओरियेन्टल सोसायटीनुं १९७०मां मानार्ह सभ्यपद आपीने मुनिजीनुं गौरव करवामां आव्युं हतुं। अत्यारे पू. आ. विजयशीलचंद्रसूरीश्वरजीनी प्रेरणाथी गुजरात विश्वकोश ट्रस्ट द्वारा संशोधनक्षेत्रे आगवुं कार्य करनारने "आगमप्रभाकर मुनिराज श्री पुण्यविजयजी सुवर्णचंद्रक एनायत करवामां आवे छे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लखनौ म्युझीयमनी जैन मूर्तिओ

लेखक- मुनिराज श्री न्यायविजयजी

(गतांकथी आगळ..)

मंदिरनां शिखरो, शिखर उपरना भाग, सुंदर आरस जेवा लीला के पत्थरोमां कोतरेलां मनोहर तोरणो, पत्थर उपर आलेखेलां सुंदर चित्रो, मंदिरना प्रवेशद्वारना उम्बरो, पिठिका, सिंहद्वार, सिंह अने हाथीनां बावलां, पुतळां, पत्थर उपर झीणी कारीगरीथी अंकित नाना स्थंभो, विशाळ स्थंभोना टुकडा आदि अनेकविध वस्तुओ जोई हृदय प्रफुल्लित थयुं अने साथे साथे अनेकगणी वेदना हृदयमां अनुभवी। केवां सुंदर गगनचुंबी अलिशान मंदिर हशे ? निरंतर घंटानादथी गाजतां ए मंदिरे भूगर्भमां समायां अने आजे ध्वस्तदशामां अन्य प्रेक्षकोनुं कुतूहल भाजन बनी रहेल दशा जोई क्या भक्तजननुं हृदय न द्रवे?

त्रीजे दीवसे अमे पुनरपि त्यां गया अने परम संतोषपूर्वक बधी मूर्तिओना शिलालेखो जोया। पहेले दिवसे नोंधेला नंबरमां टुंक वीगत उमेरी अने बीजी पण नवी वस्तुओ जोई। आमां एक हरिणीगमेषीदेव के जे भगवान महावीरनुं देवानंदानी कुक्षिमांथी हरण करे छे, ते विषयनुं चित्र एक मनोहर पत्थर उपर आलेखायेल छे। आनी शोध करवामां बधायथी वधारे महेनत पडी। अंते त्रण विभागवाळो ते पत्थर हाथ आव्यो। बधानुं मिलान करी बराबर चित्र मेळव्युं त्यारे ज शांति थई।

संग्रहस्थानना मकानमां मुख्य त्रण विभाग छे: जमणी बाजुना त्रण होल, डाबी बाजुना त्रण होल, अने एक वचली लाईन छे। आ उपरांत जमणी बाजुना होलनी पाछळ पण एक सीधी लाईन छे, जेमां खास करीने कनिष्क अने कुशान कालीन मूर्तिओ छे। दरेक मूर्ति उपर इंग्लीशमां J लखेल छे, अने नंबरो छे ते पण इंग्लीशमां ज छे। लगभग नवसोथी हजारना नंबरो छे। आखा मकानमां, मात्र थोडा अपवाद सिवाय, बधा प्राचीन अवशेषो जैनधर्मद्योतक ज छे। J ए खास जैन विभागनुं सूचन करे छे। जो के M तथा E संज्ञावाळी पण जैन मूर्तिओ छे पण ते थोडी ज छे।

वचला विभागमां नानी सुंदर जिनमूर्तिओ घणी छे। आठ दस मोटी मूर्तिओ छे। आमां थोडी अखंडित छे। प्रायः घणी मूर्तिओ उपर शिलालेख छे। शासनदेवी, मंदिर, अने आयागपट्टना टुकडाओ अस्त व्यस्त पथरायेल छे। J 776 नंबरवाळी पंचतीर्थी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जे बन्ने बाजु काउस्सगीयावाळी छे ते श्री मुनिसुव्रतस्वामीनी प्रतिमाजी बहु ज मनोहर छे। प्रभुना मस्तक उपर सुंदर मुगट छे, आभूषणो छे अने लंगोट छे। आभूषणो अने पंचतीर्थी बनाववामां तो शिल्पीए खूब कळा वापरी छे। सुंदर, काळा अने कंईक लीलाश पडता पत्थर उपर बहु ज मनोहर मूर्ति रचवामां आवी छे। सुंदर परिकर सहित तेनी उंचाई एक बेठा मनुष्य जेटली छे। एनी नीचे आ प्रमाणे लेख छे –

सं० १०६३ माघ सुदी १३ बु....सावट वास्तव्य प्राग्वट बलीकुरी सीया । [१] ककूलयोः सुतन वीवा नाम्न....[२] श्रावकेन कारितेयं मुनिसुव्रतस्य प्रतिमा !

लेख तो लांबो हतो परंतु वादळांनु अंधारुं होवाथी अने लेख घसाई गयेल होवाथी तेम ज साधनोनो पण अभाव होवाथी आखो उतारी शकायो नथी। अगीयारमी शताब्दीनी आ मूर्तिनी रचना बहु ज आकर्षक छे। मुगट, कुंडल अने बीजा अन्य आभूषणो एवां सुरुचिपूर्ण आलेखायां छे के ते जोतां ज मन ललचाई जाय छे।

आवी ज रीते वचली चालीमां ज J 790, J 793 सुंदर अर्धचन्द्राकार बे मनोहर चोवीसीओ छे। अर्धचंद्राकार पत्थरमां नाना जिनेश्वरोनी मूर्ति बहु ज आकर्षक लागे छे। आ सिवाय बीजी पण नानी प्रतिमाओ बहु ज सुंदर अने हृदयंगम छे।

जमणा मोटा होलमां ते घणी ज प्राचीन अने मनोहर प्रतिमाओ छे। जेमां मुख्य पद्मासनस्थ चोमुखजीनी प्रतिमाओ छे। मथुराना प्राचीन जैनसंग्रहना मुगटमणिनी आने उपमा आपवी योग्य छे। तेना नंबरो अनुक्रमे १४२, १४३, १४८, १४५, छे। J 142 प्रतिमाजी बहु ज सुंदर अने विशाल छे।

J 143 मा नंबरवाळी प्रतिमाजी बहु ज सुंदर अने आकर्षक छे। सुंदर हास्य झरती आ प्रतिमाजी जाणे मौनपणे त्याग अने तपनो अमोघ मंत्र सुणावती होय तेम लागे छे। तेमां लेख नीचे मुजब छे-

संवत १०७६ कार्तिक (१) शुक्ल Y द्वादश्यां श्री श्वेतांबर (२) (पछी घसाई गयेल छे) माथुरी (3) कायां श्री देववि.... (पंक्ति पुरी) (बीजी पंक्ति घसाई गयेल छे) त्रीजा खंडमां प्रतिमां प्रतिष्ठापिता. चोथामां उपरनी बे पंक्तिओ देखाय छे।

J 144 प्रतिमाजी भव्य छे। लेख नथी उकलतो।

J 145 आ सुंदर विशाल प्रतिमाजी उपरथी नीचे मुजब लेख लीधो छे:–

संवत् ११३४ श्री सेताम्बर श्री, माथुर संध श्री, देवतति (१) निमित प्रतिमा कारी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आनी नीचे वस्त्रधारी साधुओ भक्तिभावे अंजलि जोडी उभा छे। आ मूर्ति बहु ज रम्य अने मनोहर लागे छे।

आ चारे बेठी प्रतिमाओ एक ज समयनी अने समान आकृतिवाळी हशे; परंतु कई कारणवशात् त्रण प्रतिमाओ न रहेवाथी थोडा ज समयमां बीजी मूर्तिओ बनावरावी तेनुं स्थान पूरवामां आव्युं हशे।

यद्यपि प्रतिमाओ तो चारे मनोहर छे। किन्तु १४३ नंबरवाळी प्रतिमामां ते कोई कलाधर विधाताए परम शांतिना समये तेनी रचना करी साक्षात प्रभुताने उतारी छे, एम कही शकाय। तेनुं हृदयंगम हास्य, अमृत झरतुं कांईक नमणुं अने खुल्लुं नेत्रकमलनुं युगल प्रेक्षकने त्यांथी दूर खसवानुं मन ज नथी थवा देवुं। तीर्थाधिराज श्री शत्रुंजय उपर बिराजमान युगादिदेव श्री आदिनाथ प्रभुथी सहेज नानी आ चारे प्रतिमाओ छे। आ जिनमूर्तिओ माटेनुं म्युझीयम योग्य स्थान नथी, परंतु पर्वतना शिखर उपरनुं काई आलिशान जिनमंदिर होई शके।

J 77 मां प्रभु पार्श्वनाथनी मनोहर मूर्ति छे।

J 879 मां पण पार्श्वनाथ प्रभुनी बहु ज सुंदर प्रतिमाजी छे। नागराजनुं मनोहर आसन अने धरणेन्द्रनी सेवा आदि दश्य बहु ज रळीयामणुं लागे छे।

J 236 नाना सुंदर मुख छे। आकृति नानी छे, परंतु वैराग्य अने शान्तिना उपदेशामृतनो धोध वहेवरावती प्रतिमाओ छे।

J 626 हरिणगमेषी देव देवानंदानी कुक्षीमांथी भगवान महावीरने हस्तसंपुटमां उपाडीने राणी त्रिशलानी कुक्षीमां पधरावववा लई जाय छे ते समयनुं आमां आलेखन छे। एक बाजु मनहर शयामां देवानंद सुतां छे। बीजी बाजु राजभुवनमां पल्यंक श्य्यामां त्रिशालादेवीजी सुतां छे। पासे दासीओ सुती छे। वच्चे हरिणगमेषी देव प्रभु वीरने भक्तिथी उपाडीने देवराणी त्रिसलाना भुवन पासे आव्या छे। एवुं सरस दृश्य छे के शिल्पी जाणे ते समये दृष्टारूपे हाजर ज होय ने ? देवानंदाना, त्रिशला देवीना अने हरिणगमेषीना भावे जाणे साक्षात, जोया होय, स्थित्यंतर, परावर्तन जाणे नजरे निहाळ्युं होय तेम मूळ वस्तु ज साक्षात् आमां देखाय छे। आ चित्र शोधतां अमने एक कलाक थयो हतो। पत्थर तुटी गयेल छे। महामहेनते मेळवी एक करी धारीधारीने जोयुं त्यारे ज एनां दर्शन थयां हतां।

(क्रमशः)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुस्तक समीक्षा

लेखक - डॉ. हेमन्त कुमार

पुस्तक नाम	:	जैन ज्ञानभंडारोनो इतिहास
कर्ता	:	विविध विद्वान
संकलन-संपादन	:	हितार्थरत्नविजयजी
प्रकाशक	:	उमरा श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ, सुरत
प्रकाशन वर्ष	:	वि. सं. २०७८
आवृत्ति	:	प्रथम
मूल्य	:	१५००/-
भाषा	:	गुजराती एवं हिन्दी
विशेषता	:	प्राचीन काल से अद्यपर्यन्त जैन धर्म के चारों संप्रदायों के नामी-अनामी ज्ञानभंडारों की समृद्धि, कार्य प्रणाली आदि का विस्तृत विवेचन करता लेखों का संकलन तथा सभी ज्ञानभंडारों की सूचनाएँ एक जगह से उपलब्ध।

प्राचीन काल में ज्ञान को सुनकर संग्रह करने की परम्परा थी। जैसे-जैसे स्मरण शक्ति का ह्रास होता गया, ज्ञान विलुप्त होने की संभावना बढती गई। अनेक महापुरुषों ने विलुप्त हो रहे ज्ञान को पुनः संकलित-संग्रहित करने के उद्देश्य से उसे लिखवाने हेतु समयानुकूल उपाय किया। आज उसी का प्रतिफल है कि हमारे समक्ष आगम, आगमेतर, न्याय, दर्शन, ज्योतिष, आयुर्वेद, कला, शिल्प आदि विभिन्न विषयों से संबंधित अनेकों ग्रंथ ज्ञान विरासत के रूप में उपलब्ध हो रहे हैं। यदि परिश्रम करके ग्रंथ लेखन का कार्य नहीं किया या करवाया जाता तो उसकी कल्पना मात्र ही हमारे लिए असह्य है।

ग्रंथलेखन के प्रारम्भिक काल से ही अनेक पूज्य महात्माओं, राजा, मंत्री, श्रेष्ठी, श्रावक आदि ने अपने धन का सदुपयोग करके विविध ग्रंथों का लेखन किया और करवाया। श्रावकों के आवश्यक क्रिया में शास्त्र दान भी एक महत्त्वपूर्ण क्रिया समाहित है जिसके परिणाम स्वरूप ऐसे अनेक उदारहण मिलते हैं कि अमुक श्रावक ने अमुक ग्रंथ लिखवाकर अमुख साधु-साध्वीजी को स्वाध्याय हेतु अर्पित किया। मात्र लिखने लिखवाने तक ही उनके कार्य सीमित नहीं रहे बल्कि उनके संग्रह और सुरक्षा हेतु भी पूर्णतः सजग रहकर योग्य व्यवस्था करते करवाते रहे हैं। अनेक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उदाहरणों के द्वारा यह कहा जा सकता है कि पूज्य साधु-साध्वीजी भगवन्तों ने समय-समय पर श्रावकों को प्रेरित कर ज्ञानभंडारों की स्थापना करवाई और उसके योग्य संचालन हेतु भी सुन्दर व्यवस्था करवाई।

पूज्य मुनिराज श्री हितार्थरत्नविजयजी म. सा. ने बड़े ही धैर्य के साथ इस श्रम एवं समय साध्य कार्य को पूर्ण किया है। इस कार्य हेतु उन्होंने पिछले सौ वर्षों के अन्तराल में प्रकाशित विभिन्न सूचिपत्रों, मैगजीनों, स्मृतिग्रंथों में हस्तप्रत भंडार से संबंधित जितने भी लेख प्राप्त हुए उनका संकलन किया। प्राचीन ज्ञानभंडारों की सूचनाएँ तो संकलित की ही साथ ही वर्तमान काल में सक्रिय ज्ञान भंडारों के साथ-साथ डिजीटल रूप में कार्यरत संस्थाओं की भी सूचनाएँ एकत्र करके विशालकाय ग्रंथ का सर्जन किया है।

कुल ५ विभागों में विभक्त इस ऐतिहासिक संदर्भ ग्रंथ में जैन धर्म के सभी संप्रदायों के पूज्य साधु-साध्वीजी तथा जैन संघों द्वारा संचालित भारतभर के लगभग सभी प्राचीन एवं अर्वाचीन ग्रंथालयों की विस्तृत सूचनाओं का संकलन किया गया है। साथ ही अनेक अनुभवी एवं इस क्षेत्र में कार्यरत पूज्य महात्माओं-महानुभावों के लेख, उनके उद्गार आदि का भी विशाल संग्रह किया गया है।

यह बात बिलकुल सत्य है कि जब केवली भगवन्त उपस्थित नहीं होते हैं तब उनकी छवि एवं उनकी वाणी ही इस दुषमकाल में जैन धर्म का आधार होता है। कुछ विद्वानों की मान्यता है कि यदि जिन बिम्ब किन्हीं कारणों से नष्ट हो भी जाता है तो परिस्थिति अनुकूल होने पर दूसरे सोमपूरा को बुलाकर नई प्रतिमा बनवाई जा सकती है, किन्तु यदि जिनागम नष्ट हो जाता है तो दूसरे सुधर्मास्वामी, हरिभद्रसूरि, हेमचंद्राचार्य, महोपाध्याय यशोविजय कहाँ से लाएँगे जो इनकी रचना करेंगे। इसलिए जिनबिम्ब से भी अधिक सुरक्षा जिनागम की करने की आवश्यकता है। हमारे ज्ञानभंडार जितने समृद्ध और सुव्यस्थित होंगे हमारी संस्कृति, हमारा ज्ञान भी उतना ही सुरक्षित और सुव्यवस्थित रहेगा।

पूज्य मुनिश्रीजी ने इस ग्रंथ का निर्माण करके जैन समाज विशेषकर संशोधक-संपादकों के लिए एक प्रकाश स्तम्भ स्थापित कर दिया है। भविष्य में किसी भी विद्वान को यदि उसे अपने संशोधन कार्य हेतु किसी हस्तप्रत या अन्य किसी भी प्रकार के संदर्भ आदि की आवश्यकता होगी तो उसे अब भंडारों की सूची या उसके पता आदि के लिये यत्र-तत्र संपर्क करने की आवश्यकता नहीं रहेगी। वे अपनी अपेक्षित सूचनाएँ इसके माध्यम से शीघ्रता से प्राप्त कर सकेंगे।

(अनुसंधान पेज नं १९ पर)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समाचार सार

कल्हार ब्लूझ एन्ड ग्रीन्स में राष्ट्रसंत पूज्य आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा आदि श्रमण-श्रमणीवृंद का पावन पदार्पण

दिनांक 17 मार्च, 2022 को प्रातः 7.30 बजे पूज्य राष्ट्रसंत श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा का अपने शिष्य-प्रशिष्यों के साथ अप्रतिम हर्षोल्लास पूर्वक कल्हार ब्लूझ एन्ड ग्रीन्स(क्लब हाउस), अहमदाबाद के परिसर में शहनाई आदि मंगल वादनपूर्वक प्रवेश हुआ। वहाँ प्रथम प्लोट की भूमि पर भव्य जिनालय निर्माण हेतु पूज्य राष्ट्रसंतश्री ने वासक्षेप विधान किया तथा चतुर्विध सकल संघ को मंगल पाठ सुनाकर आशीर्वाद प्रदान किया। प्रातः 8.30 बजे प. पू. राष्ट्रसंतश्री का हृदयस्पर्शी प्रवचन हुआ। पूज्यश्रीजी ने अपने प्रवचन में श्रावक धर्म की महत्ता पर प्रकाश डाला। इस शुभ अवसर पर अनेक धर्मप्रेमी श्रद्धालुओं ने व्याख्यान का लाभ लिया तथा व्याख्यान के बाद सुश्रावक श्री प्रविणभाई शाह परिवार के द्वारा भक्तिपूर्वक जिनालय निर्माण कार्य शीघ्रता से पूर्ण हो तथा पूज्य राष्ट्रसंतश्री गुरु महाराजा का आगामी चातुर्मास का लाभ हमें प्राप्त हो ऐसी प्रार्थना की।

पूज्य राष्ट्रसन्त आचार्यश्रीजी की पावन निश्रा में आयोजित आगामी विशिष्ट कार्यक्रमों की रूपरेखा

गांधीनगर-सेक्टर 22 शंखेश्वर पार्श्वनाथ श्वे. मू. पू. जैन संघ के परिसर में तपागच्छ अधिष्ठायक श्री माणिभद्रवीर तथा श्रुतदेवी श्री सरस्वती माता की प्रतिमाओं का त्रिदिवसीय भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन

गांधीनगर-सेक्टर 22 शंखेश्वर पार्श्वनाथ श्वे. मू. पू. जैन संघ में पूज्य राष्ट्रसंत आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा आदि श्रमणवृंद का संवत 2077-78 में सम्पन्न हुए अविस्मरणीय चातुर्मास के मध्य प्राप्त मंगल प्रेरणानुसार जिनालय संकुल में दो नूतन देरीओं का निर्माण कार्य किया गया। उन देरीओं में दिनांक 15-16-17 अप्रैल 2022 को त्रिदिवसीय भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव का श्रीसंघ के द्वारा आयोजन किया जाएगा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इस पावन महोत्सव में शुभ निश्रा- शासन प्रभावक पूज्य राष्ट्रसंत आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा, प. पू. आ. श्री हेमचंद्रसागरसूरिजी म.सा., प. पू. आ. श्री विवेकसागरसूरिजी म.सा., प. पू. गणिवर्य श्री प्रशांतसागरजी म.सा. आदि श्रमण-श्रमणीवृंद प्रदान करेंगे।

प. पू. गच्छाधिपति वि. रामसूरीश्वरजी महाराजा (डहेलावाला) के शिष्यरत्न प. पू. आ. श्री विजयहरिभद्रसूरिजी म.सा. तथा आ. श्री विजयहितरत्नसूरिजी म.सा. के द्वारा विशिष्ट उपस्थिति प्रदान की जाएगी।

इस मंगलमय अवसर पर पधारने हेतु श्री गांधीनगर श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ ने भावभक्तिपूर्वक आमंत्रित किया है।

पूज्य राष्ट्रसंत आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा आदि श्रमण-श्रमणीवृंद की पावन निश्रा में बड़ी दीक्षा महोत्सव का आयोजन

राष्ट्रसन्त परम श्रद्धेय आचार्य श्रीमद् पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा आदि विशाल समुदाय की पावन निश्रा में दिनांक 21 अप्रैल, 2022 को नूतन बालमुनि श्री रत्नपद्मसागरजी म.सा. तथा नूतन साध्वी श्री क्रियांशुरत्नाश्रीजी म.सा. की बड़ी दीक्षा का आयोजन किया जाएगा।

बड़ी दीक्षा के इस पावन महोत्सव का आयोजन श्री पुष्पदंत जैन संघ के द्वारा वासुपूज्य बंग्लोज, फ़न रीपब्लिक के सामने, सेटेलाईट, अहमदाबाद में किया जायेगा।

परम पूज्य राष्ट्रसंत श्री आचार्यदेव पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा आदि श्रमणवृंद की पावन निश्रा में त्रिदिवसीय श्रुत व संयम अनुमोदना महोत्सव आयोजन

प्राचीन तीर्थ व श्रुतोद्धारक, राष्ट्रसंत आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी आदि श्रमण-श्रमणीवृंद की पावन निश्रा में दिनांक 23-24-25 अप्रैल, 2022 को पूज्य राष्ट्रसंतश्री के शिष्यरत्न श्रुतसेवी आचार्य श्री अजयसागरसूरिजी म. सा. के दीक्षा पर्याय के 40 वर्ष की पूर्णता के पावन अवसर पर संयम त्रिदिवसीय अनुमोदना महोत्सव का आयोजन श्रुतभक्त-तीर्थभक्त परिवार द्वारा किया जाएगा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्रिदिवसीय महोत्सव के पावन अवसर पर विविध पूजा विधि, कैलास श्रुतसागर ग्रंथसूची भाग-33 का विमोचन किया जाएगा। प. पू. आचार्य श्री अजयसागरसूरिजी म. सा. ने अपने संयम जीवन काल में शासन के अनेक कार्यों में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है उसमें श्रुतज्ञान की सेवा, संस्कार वाटिका की स्थापना तथा तीर्थ रक्षा इन मुख्य तीन क्षेत्रों में पूज्यश्री का विशिष्ट योगदान व कार्य का प्रभाव रहा है, इन कार्यों में सहयोगी बने विशिष्ट महानुभावों के योगदान का स्मरणपूर्वक उनके कार्य की अनुमोदना तथा अभिनंदन किया जायेगा। इसी प्रसंग पर आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर की हस्तप्रतों की सूची कैलास श्रुतसागर ग्रंथसूची भाग 33 का विमोचन होगा। इस सूची को ज्ञानमंदिर के पंडित एवं अन्य सहयोगी समर्पित टीम ने खूब ही संशोधनपूर्वक अपने अथक एवं कडे परिश्रम से तैयार किया है। इस विमोचन समारोह के निमित्त एक विशिष्ट प्रदर्शन एवं प्रेजेन्टेशन भी रखा जाएगा जिसमें ज्ञानमंदिर द्वारा श्रुतसेवा के क्षेत्र में दिये गए विलक्षण योगदानों को एवं ज्ञानमंदिर की विशिष्ट उपलब्धियों तथा प्रवृत्तियों को दर्शाया जाएगा।

ज्ञानमंदिर के पिछले 30 से ज्यादा वर्षों में श्रुतसेवा के कार्यों की वजह से विद्वान गुरुभगवंतों, विश्वभर के संशोधकों को एवं श्रीसंघ को कैसे-कैसे फायदे हुए हैं तथा उनके माध्यम से कैसे-कैसे ग्रंथों का सर्जन हुआ है, उन सब की एक विशिष्ट झलकें भी दिखाई जाएंगी।

गांधीनगर कोबातीर्थ के समीप नवनिर्मित जिनालय में श्री मुनिसुव्रतस्वामी आदि जिनबिंबो तथा देव-देवी की पंचाह्निका प्रतिष्ठा महेत्सव का आयोजन

परम पूज्य राष्ट्रसन्त आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा आदि श्रमण-श्रमणीवृंद की पावन उपस्थिति में दिनांक 21 से 25 अप्रैल, 2022 तक पंचदिवसीय भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया जायेगा।

इस पावन महोत्सव में अनेकविध पूजा विधि-विधान आदि धार्मिक अनुष्ठानों के साथ परमात्मा की भव्य प्रतिष्ठा का कार्यक्रम आयोजित है। दिनांक 26 अप्रैल, 2022 को प्रातः शुभ मुहूर्त्त में द्वारोद्घाटन किया जायेगा। श्री कैलास आराधना केन्द्र, नभोई, कोबा के द्वारा इस भव्य जिनेन्द्रभक्ति के महामहोत्सव में भाग लेने हेतु भाविकों को सादर आमंत्रित किया गया है।

For Private and Personal Use Only

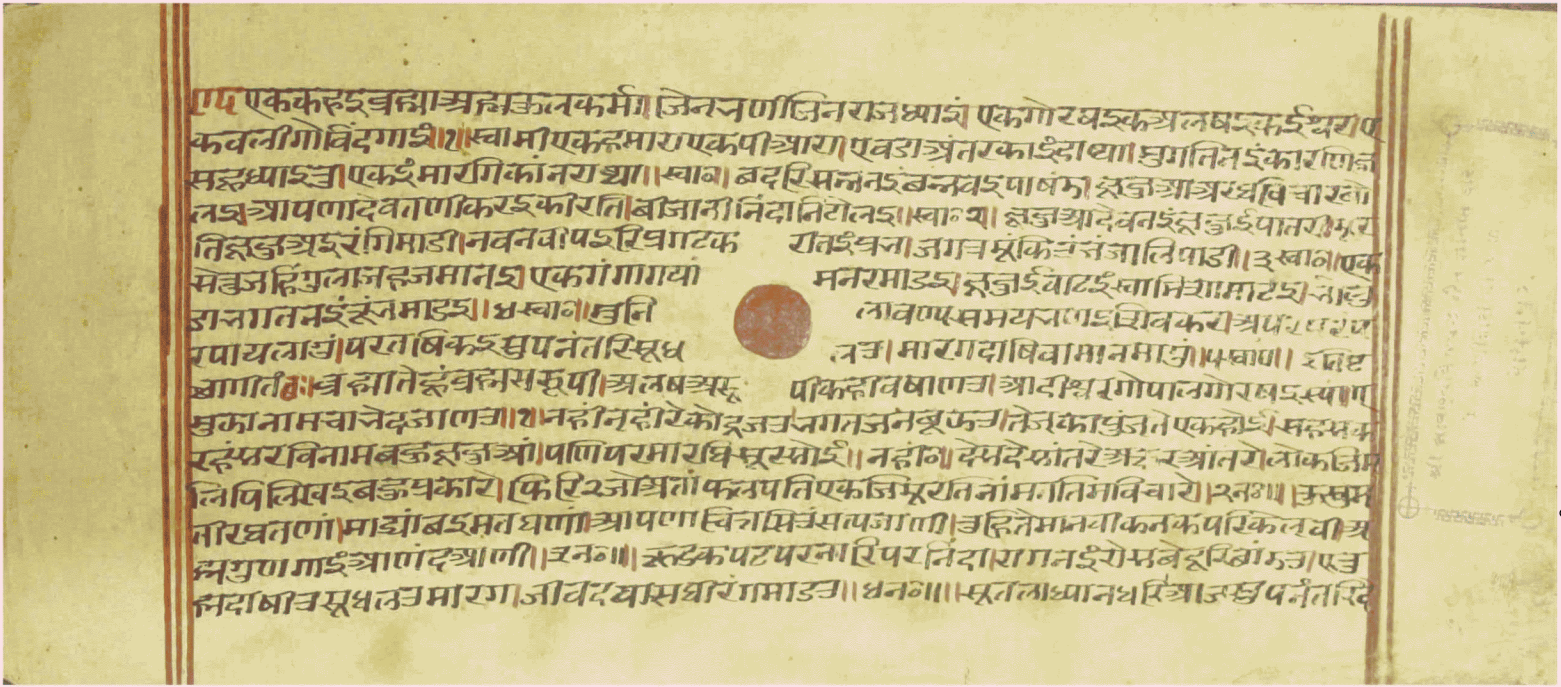

कवि लावण्यसमय की कृति का पत्र.
(लावण्यविजय ज्ञानभंडार, राधनपुर. प्रायः कवि के हस्ताक्षर. देखे पृ. १०)

For Private and Personal Use Only
Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra
www.kobatirth.org
Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Registered Under RNI Regestration No. GUJMUL/2014/66126 SHRUTSAGAR (MONTHLY).
Published on 15th of every month and Permitted to Post at Koba so, and on 20th data
of every month under Postal Regd. No. G-GNR-334 issued by SSP GNR valid up to 31/12/2024.

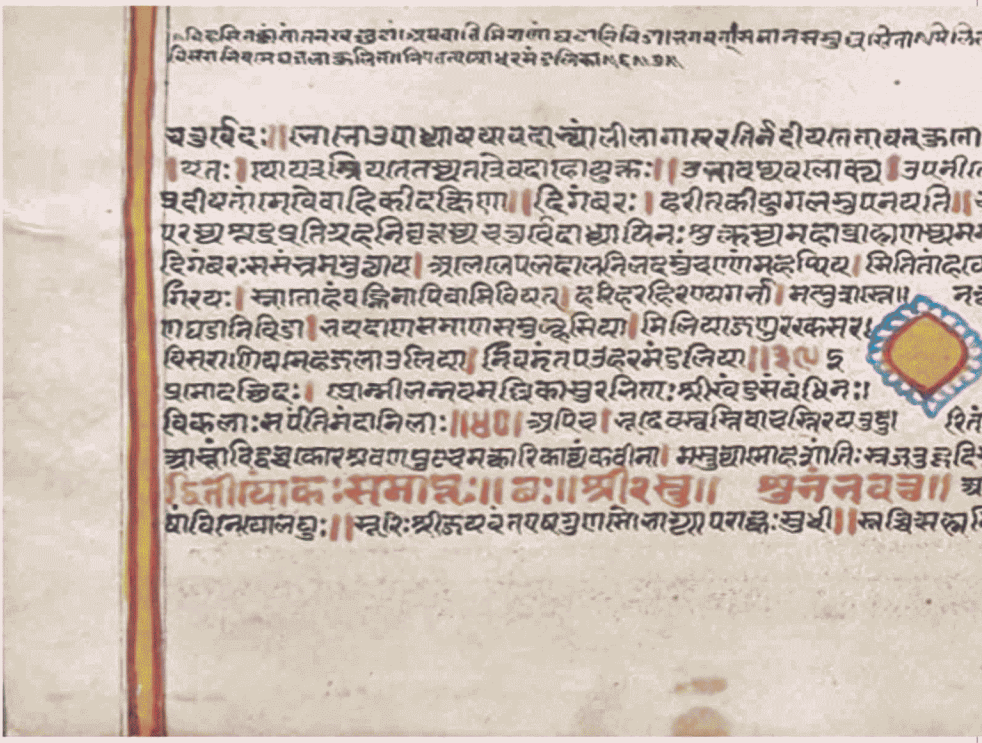

BOOK-POST / PRINTED MATTER
प्रकाशक
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा
जि. गांधीनगर ३८२४२६
फोन नं. ७५७५००१०८१, ७५७५००१०८२
७५७५००१०८४, ७५७५००१०८५
Website : www.kobatirth.org
email : gyanmandir@kobatirth.org

Printed and Published by : DARSHIT GAUTAM SHAH, on behalf of SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, New Koba, Ta.&Dist. Gandhinagar, Pin-382426, Gujarat.
And **Printed at :** NAVPRABHAT PRINTING PRESS, 9, Punaji Industrial Estate, Dhobighat, Dudheshwar, Ahmedabad-380004 and
Published at : SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, New Koba, Ta.& Dist. Gandhinagar, Pin-382426, Gujarat. **Editor :** GAJENDRA RAGHUNATHJI SHAH

For Private and Personal Use Only